फूलोंकी डाली

[उर्दूके प्रसिद्ध शायरोंकी चुनी हुई गजलें]

संग्रहकर्त्ता—

पं० राजनारायण चतुर्वेदी "आजाद"

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

२०३, हरिसन रोड,

कलकत्ता।

ब्रांच—ज्ञानवापी, काशी।

प्रथम बार] संवत् १९९० [मूल्य १)

प्रकाशक—

बैजनाथ केडिया

प्रोप्राइटर

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

२०३, हरिसन रोड

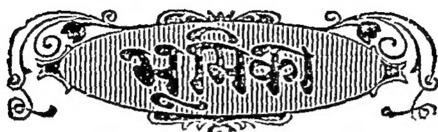
कलकत्ता ।

मुद्रक—

पं० काशीनाथ तिवारी

"वणिक प्रेस"

१, सरकार लेन, कलकत्ता ।



आवश्यकता आविष्कारकी जननी है। देशके मुसलमान शासकों और प्रजाके पारस्परिक विचार-विनिमयकी आवश्यकताने उर्दू ज़बानको जन्म दिया। उर्दू यद्यपि दक्षिण भारतकी पहाड़ियोंपर पैदा हुई, परन्तु उसका लालन-पालन व्रजमण्डल और उसके आस-पासके स्थानोंमें हुआ। बचपनमें उसपर दक्षिणी रंगका अधिक प्रभाव था, मगर दिल्ली, आगरा और लखनऊकी आब-हवाने शीघ्र ही उसे दूर करके उसपर अपनी स्थायी और अमिट छाप लगा दी। उर्दूके पोषक और पालक प्रायः विदेशी मुसलमान थे। उन्होंने उसका पालन-पोषण और बनाव-शृङ्गार ईरानी ढंगपर किया। व्रजभाषाकी लावण्यमयी माधुरी-पर ईरानी काट-छाँट और वेश-भूषाने ऐसा कमाल किया कि उर्दू शीघ्र ही एक मधुर और लोकप्रिय साहित्यिक भाषा बन गई। शासक जाति और राज्य-सत्ताके प्रोत्साहनसे उसका विकास भी बहुत शीघ्रतासे हुआ।

मगर बदक़िस्मतीसे उर्दूका जन्म उस समय जब उसके पालकोंका सौभाग्य-सूर्य मध्याह्नको पार करके शीघ्रतासे अस्ताचलकी ओर भाग रहा था। मुसलमान राज्य-सत्ताका ऐश्वर्य प्रतिक्षण क्षीण हो रहा था। शासक-गण अपने पुरखोंके शौर्यको भूलकर नाशके निश्चित मार्ग, भोग-विलास और आमोद-प्रमोदको अपना चुके थे। तल-वारसे जूझकर शहीद होनेकी अपेक्षा माशूक़की 'तेग़े-नज़र' से जीते जी शहीद होना वे ज्यादा अच्छा समझते थे। उनकी इस विलासपूर्ण मनोवृत्तिका फल बेचारे उर्दू साहित्यको भोगना पड़ा। उर्दूमें गम्भीर साहित्यका उत्पादन ही न हो सका और जो कुछ हुआ भी वह प्रायः नगण्य-सा है। उस समयका उर्दूका गद्य-साहित्य तो प्रायः न होनेके बराबर है। हाँ पद्य-साहित्य है, और बहुत है। परन्तु उसका अधिकांश भाग विलास-लिप्सा-पूर्ण शृङ्गार रससे ओत-प्रोत है। उर्दूमें ग़ज़ल-ख्वानीकी भरमार है। इस ग़ज़ल-ख्वानीका विकास ठेठ ईरानी ढंगपर हुआ है। विदेशी होनेके कारण उसमें अकसर कृत्रिमता नज़र आती है। मगर जहां कहीं भी शायरोंने देशी माल-मसाले-से काम लिया है, वहां उन्हें बहुत अधिक सफलता मिली है।

उर्दू ग़ज़ल-ख्वानीके विकासमें सबसे अधिक काम मुशायरोंने किया है। भारतकी किसी भी अन्य भाषामें मुशायरों या कवि-सम्मेलनोंकी वह प्रौढ़ प्रणाली नहीं दिखाई देती जो उर्दूमें मिलती है, यद्यपि समयके फेर और फ़िरक़ाबन्दीके गन्दे दांव-पेंचोंसे उसमें भी अनेक दोष आ गये हैं और कभी-कभी—

सरस कविनके हृदयको, सालत हैं द्वै कौन?
असमुझवार सराहिबो, समुझवारको मौन॥

वाली उक्ति चरितार्थ हो जाती है। मुशायरोंमें एक 'मिसरा तरह' और 'क़ाफ़िया' और 'रदीफ़' पहलेसे निश्चित कर दिया जाता है, तमाम शायर उसी 'वज़न' और 'रदीफ़-क़ाफ़िये' में ग़ज़लें कहा करते हैं। शायरपर किसी तरहकी पाबंदी लगाना उसकी कलाका गला घोंटना है, सच्ची कविताके विकासमें बाधा डालना है। मगर मुशायरोंने यद्यपि उर्दू कविताके बाहरी आकार-प्रकारपर बन्दिशें लगाईं लेकिन उसकी आत्माको—कविताके विषयको बेइन्तहा आज़ादी दे दी। इस स्वतन्त्रताने न केवल उर्दू कविताको बचा लिया बल्कि उसके अनेक दोषोंपर पर्दा डालकर उसमें एक सजीवता पैदा कर दी। यद्यपि ग़ज़लमें आशिक़-माशूक़की प्रेम-गाथाएँ, विरह-वेदना, सौन्दर्य, आशा-निराशा,

उपालम्भ और प्रेमके घात-प्रतिघात ही वर्णित विषय होते हैं, मगर यदि कवि चाहे तो संसारका कोई ऐसा विषय नहीं जो ग़ज़लमें वर्णन न कर सके। उसपर तुर्रा यह कि एक ही ग़ज़लके विभिन्न अशआरका एक दूसरे से कोई ताल्लुक़ नहीं। एक ही ग़ज़लके एक शेरमें भगवान की पवित्रता या सृष्टिके गूढ़तम रहस्यका वर्णन कीजिये, दूसरेमें माशूक़का सौन्दर्य बखानिये, तीसरेमें रक़ीबके मुंहपर कालिख पोतिये और चौथेमें बन्दर नचाइये, फिर भी कोई एतराज़ नहीं कर सकता!

इस विषय-स्वातन्त्र्यने उर्दू कवितामें शृंगारके अतिरिक्त अन्य सब रसोंकी कमीको दूर करनेमें किसी क़दर काम किया है। उसने कवियोंके विचारोंकी उड़ानके लिये एक असीम आकाश खोल दिया है। मेरी समझमें उर्दू शायरीकी हरदिल अज़ीज़ी, और ताज़गी बहुत-कुछ इसी विषय-स्वाधीनताकी बदौलत है। एक ही छन्द और एक ही तुकके बन्धनमें रह कर भी शायर कहाँ-कहाँकी कौड़ी ला सकता हैं, यह बात उर्दू-शायरीकी सबसे बड़ी विशेषता है और इस विशेषताकी ख़ासी अच्छी बानगी पाठकोंको इस पुस्तकमें मिलेगी।

उर्दू ग़ज़ल-ख़्वानी, जिस प्रणालीपर आरम्भ हुई, और

जिस ढंगसे बढ़ो, उसका चरम विकास हो चुका है। यद्यपि अबतक उसी ढंगपर ग़ज़ल-ख़्वानी होती जाती है, मगर ज़मानेकी रंगत बदल गई है, हवाका रुख़ पलट चुका है और उर्दू कविताकी प्रगति एक नये मार्गपर तेज़ी से बढ़ रही है। पुराने ढंगकी शायरीके जितने फूल खिलने थे, खिल चुके; उसकी पूरी फस्ल तैयार हो चुकी; उसका मौसिम बदल रहा है। 'आज़ाद' साहबने बड़ी मेहनतसे इस पूर्ण परिपक्व और पूर्ण विकसित फस्लके ख़ूबसूरत और खुशबूदार फूलोंको चुनकर यह "फूलोंकी डाली" लगाई है। उर्दू कविताके इस गतप्राय मौसिमका यह तोहफ़ा है। सौभाग्यसे साधारण फूलोंके विपरीत बाग़े-सख़ुनके फूलोंका सौन्दर्य अमर है, उनका रंग कभी फीका नहीं होता, उनकी ख़ुशबू मद्धिम नहीं पड़ती, वे हमेशा, हर मौसिममें और हर वक्त ताज़े बने रहते हैं। इसलिए यह 'फूलोंकी डाली' भी जहां रहेगी, वहाँ सौन्दर्य, ताज़गी और सुगन्धि प्रदान करती रहेगी।

संसारका सबसे बड़ा कलाकार इस जगतका स्रष्टा है। वह एक ही ज़मीनके ऊपर, एक ही सूर्य और आकाशके नीचे, तथा एक ही जल-वायुमें अगणित आकार-प्रकार,

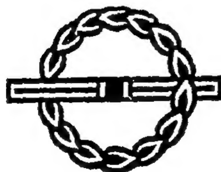
रंग-रूप और सुगन्धिके फल-फूल, बेल-बूटे पैदा करता है। कवि भी एक छोटा-मोटा स्रष्टा है। बल्कि नहीं, कितनों की रायमें तो—

विधिसे कवि सब विधि बड़े, यामें संसै नाहिं।
षटरस विधिकी सृष्टिमें, नव रस कविता माहिं॥

वास्तवमें कविका अपना एक निराला संसार, एक पृथक सृष्टि है। उर्दूके शायरोंने एक ही ज़मीन और एक ही क्यारीमें कैसी-कैसी कलापूर्ण गुलकारियां की हैं, कैसे-कैसे अनूठे बेल-बूटे उपजाये हैं, कैसे-कैसे नैसर्गिक सौरभ उत्पन्न किये हैं, इनका एक नमूना यह छोटीसी, परन्तुमधु-पराग-पूर्ण "डाली" है।

चमनकी दिलरुबा गुलकारियां अनमोल हैं, लेकिन—
दिले-शायरके दाग़ोंके भी गुल-बूटे निराले हैं॥

—ब्रजमोहन वर्मा



दो शब्द

मैं कोई शायर नहीं हूं। महज़ शेर मौज़ूं कर लेने या क़ाफ़िया बन्दी और रदीफ़की लकीर पीट लेनेका नाम शायरी नहीं है। बल्कि बक़ौल जनाब "रवां" के—

जब्त है आइनये राज़ हक़ीकत इसमें।
ये वह कूज़ा है कि दरियाकी है वसअत इसमें॥

यही शायरीकी हक़ीकत है। मेरी क़लमसे आज तक एक भी ऐसा मिसरा न निकला कि क़लमसे निकलता और ज़बानों पर रवां हो जाता। ताहम मज़ाक़े सुख़न ज़रूर रखता हूं और आला दरजेके शायरोंकी क़दमबोसीका सौभाग्य भी अक्सर प्राप्त हुआ है। बस, पिछले बारह वर्षसे काव्य-जगतसे मेरा इतना ही ताल्लुक़ है, जिसके बलपर मैं अपने पसन्दीदः कलामोंका संग्रह करके पाठकोंके सामने पेश करनेकी जुरअत कर रहा हूं। अहले कमाल इसे किस नज़रसे देखेंगे, मैं नहीं कह सकता। हां, इतना ज़रूर अर्ज़ करूंगा कि मेरी इस छोटी-सी डालीमें अक्सर प्रिय पाठकोंको कुछ अधखिली कलियां और सौरभ-हीन

पुष्प नज़र आयेंगे लेकिन मुझे पूर्ण आशा है कि किसी अनाड़ी मालीका प्रथम प्रयास समझकर वह मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

इस संग्रहको तैयार करनेमें मुझे अपने गुरु भाई श्रद्धेय जनाब मन्नीलाल साहब "जवां" से सबसे अधिक सहायता मिली है। पुस्तकका अन्तिम भाग एवं जीवन-चरित्र आपहीकी कृपाका फल है। अतः जवां साहबका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

हास्यरसके उदीयमान लेखक और उर्दू-साहित्यके मर्मज्ञ श्रीब्रजमोहनजी वर्माने कृपा करके इस पुस्तककी भूमिका लिख दी है। अतएव मैं उनका विशेष रूपसे आभारी हूं।

कलकत्ता।
२९—५—३३

—"आजाद"



१

हवाये शौकमें उड़ता हुआ परवाना आता है।



'अमीर' और आनेवाला कौन है गोरे गरीबां पर।
जो रौशन शम्अ होती है तो हां, परवाना आता है॥

"अमीर" मीनाई।

समझते हैं मेरे दिलकी, वह क्या नाफहमो नादां है।
हुजूरे शम्आ बेमतलब नहीं परवाना आता है॥

'आतिश' लखनवी।

हमारा साथ देता है उसे याराना आता है।
मुहब्बतमें बड़े अरमां लिये परवाना आता है॥

फूलोंकी डाली

१

हवाये शौकमें उड़ता हुआ परवाना आता है।



'अमीर' और आनेवाला कौन है गोरे गरीबां पर।
जो रौशन शम्अ होती है तो हां, परवाना आता हैं॥
"अमीर" मीनाई।

समझते हैं मेरे दिलकी, वह क्या नाफहमो नादां है।
हुजूरे शम्आ बेमतलब नहीं परवाना आता है॥
'आतिश' लखनवी।

हमारा साथ देता है उसे याराना आता है।
मुहब्बतमें बड़े अरमां लिये परवाना आता है॥



जो हमको दिखाता है ख़ुदा देख रहे हैं।



जो महवे अदा हैं वो अदा देख रहे हैं।
हम क्या कहें हम आपमें क्या देख रहे हैं॥
मैं उनकी तरह अहदे वफ़ासे न फिरूंगा।
अपनेको वो देखें मुझे क्या देख रहे हैं॥

—"नूह" नारवी

ख़ुदबीनी से रग़बत है तो देखें मेरे दिलको।
एक कांचके टुकड़े में वो क्या देख रहे हैं॥

'रजा' इटावी

ये पूछते हैं आपकी नज़रें हैं किधरको।
अब आपसे हम क्या कहें क्या देख रहे हैं॥

—"समर"

वह मुस्तैदे क़त्ल हैं मैं जीनेसे बेज़ार।
अब देर है क्या और वो क्या देख रहे हैं॥

—"रजवां"

इतना तो समभते हैं कि हम देख रहे हैं।
मालम नहीं आपमें क्या देख रहे हैं॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

मूसाको तरह तूर पै क्यों जाने लगे हम।
अपनेमें ख़ुदाको बख़ुदा देख रहे हैं॥
राहत हो कि तकलीफ़ हो ग़म हो कि ख़ुशी हो।
जो हमको दिखाता है ख़ुदा देख रहे हैं॥

—"'नूह" नारवी

परवानोंसे पूछो कि वह क्या देख रहे हैं।
क्या आगके शोलेमें ख़ुदा देख रहे हैं॥

—"'रज़ा" इटावी

बुतखाना ओ कावेमें कोई जाये तो जाये।
हम मस्त हैं मस्तीमें खुदा देख रहे हैं॥
मूसाको देखना है तो वो जायें तूर पर।
घर बैठे यहां नूरे ख़ुदा देख रहे हैं॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

हम पहले हसीनोंकी अदा देख रहे थे।
अब देखनेका उसके मज़ा देख रहे हैं॥

—"नूह" नारव

रुक रुकके चलाते हैं गले पर मेरे खंजर।
थम थमके तड़पनेका मज़ा देख रहे हैं॥

—"सुख़न" सहारनपुरी

आई है अजल को भी अजल हिज्रे बुतांमें।
आती नहीं, हम राहे क़ज़ा देख रहे हैं॥

—"ज़बीह" शिकोहाबादी

बल तेवरों पै है तो है चितवनमें बांकपन।
तलवारके सायेमें कज़ा देख रहे हैं॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

अल्लाह रे मुसव्विर तेरे हाथोंकी सफ़ाई।
तसवीरसे तसवीर जुदा देख रहे हैं॥

—'मज़ाहिर"

सब कहते हैं हरशैमें तुही जलवा नुमा है।
पर तुझको तो हम सबसे जुदा देख रहे हैं॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

आशिक़के सिरहाने वो दमे निज़अ हैं बैठे।
मिटती हुई तसवीरे वफ़ा देख रहे हैं॥

—"मज़ाहिर"

बालीं पै मेरी जमाअ हैं अहबाव दमे निज़अ।
ख़ामोश हैं, अन्जामे वफ़ा देख रहे हैं॥

—"अमन" लखनवी

परतो दिले सोज़ां में है उस ज़ुल्फ़ सियहका।
वैसाखमें सावनकी घटा देख रहे हैं॥
—"नूह" नारवी

दिल लोटता है तोबा इधर टूट रही है।
मयखाने पर हम आज घटा देख रहे हैं॥
'आज़ाद' कलकत्ता।

छाई हुई गुलशन पै घटा देख रहे हैं।
आई हुई तोबा पै बला पै बला देख रहे हैं॥
एक अपनी बुराई तो नज़रमें नहीं आती।
हर चीज़ मगर उसके सिवा देख रहे हैं॥
"अदीब" लखनवी।

रफ्तार सिरोही है तो खंजर है तबस्सुम।
क़ातिल तेरी एक एक अदा देख रहे हैं॥
'निहाल' स्योहारवी

जी खोलके मातम भी कोई कर नहीं सकता।
मुंह उनका मेरे अहले अज़ा देख रहे हैं॥
वह कह नहीं सकता वह कोई सुन नहीं सकता।
आंखोंसे जो हम सुबहो साम देख रहे हैं॥
तनहा नहीं इल्ज़ामे मुहब्बत था उन्हीं पर।
कुछ इसमें हम अपनी ख़ता देख रहे हैं॥
'नूह' नारवी

दुनियाकी निगाहोंमें वही सबसे बुरे हैं।
जो सारे जमानेको बुरा देख रहे हैं॥
लो, रंग जमानेको वह आते हैं चमन में।
पामाल है होनेको हिना देख रहे हैं॥

—'आज़ाद' कलकत्ता



१०

वह हवा बदली कि कोसों दूर साहिल हो गया।



बन संवर कर आप क्या निकले, कयामत आ गयी।
एक नज़र जिस जिसने देखा था कि बिसमिल हो गया॥

'सालिक' कलकत्ता

देखते ही आईना, आईना क़ातिल हो गया।
आंख उसने क्या मिलाई खुद ही बिसमिल हो गया॥

'मुश्ताक' मेरठी

× × ×

"वक़्" उसकी ज़िन्दगी है दर हक़ीक़त ज़िन्दगी।
जिसको दुनियामें सकूने क़ल्ब हासिल हो गया॥

"वक़्" देहलवी

दर्दने उठ उठके करवट तो बदलवाई मेरी।
दिलकी बेताबीसे आख़िर ये तो हासिल हो गया॥

'आजाद' कलकत्ता

दिल पकड़ कर बैठ जाता हूं मैं एक एक गाम पर।
ज़ोफ़ से एक एक कदम एक एक मञ्जिल हो गया॥

—'मुश्ताक़' मेरठी

जुस्तजए यारमें गुम ख़ुद मेरा दिल हो गया।
ये मुसाफ़िर चलते चलते आप मंज़िल हो गया॥

'होशियार' मेरठी

चलते चलते मुश्किलाते राह आसां हो गयी।
जो क़दम जमकर पड़ा वह पहली मंज़िल हो गया॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

× × ×

मैं क़रीब आ ही गया था लेकिन इसको क्या करूं।
वह हवा बदली कि कोसों दूर साहिल हो गया॥

'हकीम' रजवाँ

डूबने वालेकी उम्मीदें तलातिम ख़ेज थीं।
जब नज़र साहिल पै डाली ग़र्क़ साहिल हो गया॥

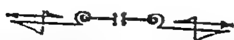
—'होशियार' मेरठी

डूबना किस्मतमें लिक्खा हो तो कोई क्या करे।
पार दरिया कर चुका तो ग़र्क़ साहिल हो गया॥

'आजाद' कलकत्ता।

११

बुतोंके हम सताये हैं ख़ुदाको याद करते हैं।



न पूछो कौन हैं क्यों नालओ फ़रियाद करते हैं।
बुतोंके हम सताये हैं ख़ुदाको याद करते हैं॥
ख़याल आता है दिलमें इस तरह लुत्फे जवानीका।
सबक़ भूला हुआ जिस तरह लड़के याद करते हैं॥

—"जलील"

तेरे बीमारे ग़मका आज शायद वक्त नाज़ुक है।
कि सारे चाराजू बैठे ख़ुदाको याद करते हैं॥

—"खां" बरेलवी

ज़हे क़िस्मत कि मुझको भूलकर भी वह नहीं भूले।
सितम ईजाद होता है तो मुझको याद करते हैं॥

— 'आज़ाद' कलकत्ता

*　　*　　*

मसीहाई न देखी होगी तूने तेग़ क़ातिलकी।
ठहर जा हम दशा तेरी दिले नाशाद करते हैं॥

—"जलील"

क़फ़स में बैठे-बैठे क्या चमनको याद करते हैं।
फ़क़त कुछ ग़म ग़लत हम अय दिले नाशाद करते हैं॥

—"शान" लखनवी

*　　　*　　　*

निकाली जा रही है हड्डियां कुछ क़ैद ख़ानेसे।
असीराने मुहब्बतको वह आज आज़ाद करते हैं॥

—"अजीज"

असीरानेक़फ़स पर आज सय्यादोंको रहम आया।
क़फ़स की तालियां खोली हैं अब आज़ाद करते हैं॥

—"सालम" लखनवी

असीरे जुल्फ यों तो सैकड़ों फरियाद करते हैं।
मगर ये देखना है वह किसे आज़ाद करते हैं॥

—"रवां"

दिले सरकश से जब्ते इश्क़ हरगिज़ हो नहीं सकता।
जो करना चाहिये आज़ादको आज़ाद करते हैं॥

—"आज़ाद"

*　　　*　　　*

जफायें सहते-सहते उनकी इस नौबतको पहुंचा हूं।
कि मुझको जिबह भी मुंह फेरकर जल्लाद करते हैं॥

—"शान"

* * *

लहद ठुकराके वह दिलका गुबार अपने मिटाते हैं।
हमारी ख़ाक भी बादे फ़ना बरबाद करते हैं॥

—"राना" लखनवी

किसी दीवाना दिलकी ख़ाक शायद उड़ती फिरती है।
बगूले आज उठ-उठकर जिसे बरबाद करते हैं॥

— "आज़ाद"

* * *

बुतोंका जिक्र करते हैं खुदाको याद करते हैं।
फ़रिश्ते भी नहीं करते जो आदमज़ाद करते हैं॥

—"रवां"

* * *

सदा सुनकर टपक पड़ते हैं आंसू राहगीरोंके।
हम ऐसे दर्दमें लिपटी हुई फरियाद करते हैं॥

—"साहिर"

किसीके गेसुये शबरङ्ग जब हम याद करते हैं।
धुंआ मुंहसे निकल आता है जब फरियाद करते हैं॥

—"सालम"

हमारी आखिरी हिचकी पै वह इरशाद करते हैं।
इन्होंको जन्तका दावा है जो फरियाद करते हैं॥

ये हालत देखने क़ाबिल है बीमारे मुहब्बतकी।
कि अहले दर्द चुप है चारगर फरियाद करते हैं॥

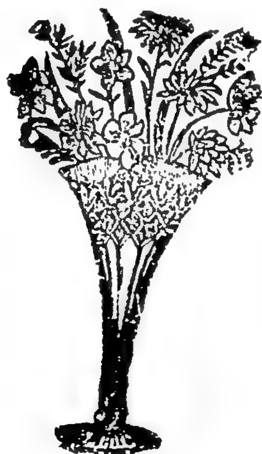
—"रवां

ये हुक्म आया है सब ज़ख़्मी कराहें कूचेसे बाहर।
कलेजा धकसे रह जाता है जब फरियाद करते हैं॥

—'उरूज

रहम आये न आये आपको, यह अपनी किस्मत है।
सुना दो दास्तां हमने अब हम फरियाद करते हैं॥

—"आज़ाद"



१२

मुझे न दिलसे खुदाके लिये भुला देना ।



वह अपनी बज़मसे उनका मुझे उठा देना ।
मेरा वो हाथ उठाकर उन्हें दुआ देना ॥
मैं मर मिटूँ तो मिटाकर मेरा निशाने लहद ।
वफ़ाका नाम ज़मानेसे तुम मिटा देना ॥
बुरी है आग रक़ाबतकी उनकी उल्फ़तमें ।
जिगरके साथ दिल ए सोज़े ग़म जला देना ॥
दिखाके फूल-सा रुख रङ्ग रूये गुलकी तरह ।
तुम आज बाग़में बुलबुलके होश उड़ा देना ॥
अगर चले न तेरी आंखके इशारेपर ।
तो आसमानको नज़रोंसे तुम गिरा देना ॥
वो उनका शर्मसे कटना लगाके तेग ओछी ।
हमारे ज़ख्मे जिगरका वह मुस्करा देना ॥

शबे फिराकमें तेरी ये काम है मेरा।
कभी चिराग जलाना कभी बुझा देना॥
खिले हैं फूल जो रोई है रातभर शबनम।
हँसी नहीं है हसीनोंका मुस्करा देना॥

—"जिगर" गोरखपुरी

जरा मुझे भी मये आतशीं पिला देना।
बुझा हुआ है दिल एक आग-सी लगा देना॥
किसीका पीके वह लेना चमनमें अंगड़ाई।
ये रङ्ग देखके गुञ्चोंका मुस्करा देना॥
गुलोंका फर्श बिछाता नहीं तू अय सैयाद।
कफसमें सूखे हुए खार ही बिछा देना॥
सितमसे लुत्फ भी खाली नहीं तेरा ज़ालिम।
हंसा-हँसाके वो मुझको तेरा रुला देना॥
"फिराक़" शेरको पढ़ना असरमें डूबे हुए।
कि याद 'मीर' का अन्दाज़ तुम दिला देना॥

—"फिराक़" गोरखपुरी

पियाला औरको साक़ी शराबका देना।
नशीली आंख दिखाकर मुझे छका देना॥
जिगरका सोज़ मिटाना पिलाके बादये वस्ल।
तुम्हींने आग लगाई तुम्हीं बुझा देना॥

बुरा हो दस्ते तमन्नाका तेरे ऐ जालिम।
बिगड़के वस्लमें उनका वह बद्दुआ देना॥
कयामत आये न उसपर, न आसमां टूटे।
बुतों! निशां मेरी तुरबतका यूं मिटा देना॥
लहदमें सुबहे क़यामत खुले जो आंख मेरी।
तुम अपनी चाँद-सी सूरत मुझे दिखा देना॥
अगर दिलोंका तड़पना हो देखना मंजूर—
तो उठके नाजसे परदा जरा उठा देना॥

—"बद्र" गोरखपुर

अभी तो करते हैं कोशिश फ़नाय हस्तीकी।
मिटा सकें न अगर हम तो तुम मिटा देना॥
किसी तरह शबे फुरकतकी सुबह हो जाये।
मरीजे हिज्रको चादर जरा ओढ़ा देना॥
ये हश्र क्या है फ़कत तुरबतोंका शक होना।
ये भेद क्या है फ़कत उनका मुस्करा देना॥
किसीसे सोजे मुहब्बतने कहलवा ही दिया।
ग़जबकी आग लगी है इसे बुझा देना॥
खुदोमें मस्त ज़मानेको भूलनेवाले।
मुझे न दिलसे खुदाके लिये भुला देना॥

न जाने कौनसे ज़र्रेसे बन गया दोज़ख।
हुज़ूर सहल समझते थे दिल जला देना॥

—"अजीज़" लखनवी

मरीजे गमको ज़हर दो चाहे दवा देना।
निज़अ में आके तो सूरत उसे दिखा देना॥
लहूसे हाथ रंगो कत्ल क्यों करो हमको।
है अपनी बज़्मसे काफी मुझे उठा देना॥
नहीं है ताकते परवाज़ तायरे दिलको।
ज़रा तो शाखे नशेमन सबा झुका देना॥
सुबहको फूल भी हंसते हैं देख शबनमको।
जो रोयें हम तो कभी तुम भी मुसकुरा देना॥
मेरी लहद पै यह कहते हुए वह आते हैं।
जो रोनेवाले हैं उनको ज़रा हटा देना॥
नई अदा है मुझे खाकमें मिलाने की।
जमीं पै नाम मेरा लिखके फिर मिटा देना॥

—"आज़ाद" कलकत्ता



१३

मेरे दुखकी दवा करे कोई ।



गर मरज़ हो दवा करे कोई
मरनेवाले का क्या करे कोई,
तुम सरापा हो सूरते तसवीर,
तुमसे फिर बात क्या करे कोई ॥
जिसमें लाखों बरसकी हूरें हों,
ऐसे जन्नत को क्या करे कोई ॥

—"दाग़" देहलवी

फांस हो तो निकाल दें अहबाब ।
ख़लिशे दिलको क्या करे कोई ॥

—"अज़ीज़" लखनवी

आज मेरा है कल तुम्हारा है ।
दिलसे उम्मीद क्या करे कोई ॥
मरने वाला तो मर गया कहकर ।
तुम न आओ तो क्या करे कोई ॥

लाख आदाव हुस्न हो मंजूर।
दिल न माने तो क्या करे कोई॥
ग़मे दुनियासे कब मिली फुरसत।
फ़िक्र उक़बा की क्या करे कोई॥
मरके निकले न हौसले दिलके।
ख़ाकमें मिलके क्या करे कोई॥
जाने वाला तो आ नहीं सकता।
उम्र भर रोके क्या करे कोई॥
क़ैदे हस्ती में ऐन राहत है।
होके 'आज़ाद' क्या करे कोई॥

—"आज़ाद" कलकत्ता

× × ×

बात पर वां ज़बान कटती है।
वह कहें और सुना करे कोई॥

—"ग़ालिब" देहलवी

आरज़ू ये है हम बग़ल होकर।
मेरा क़िस्सा सुना करे कोई॥

—"आज़ाद" कलकत्ता

बक रहा हूं जुनूं में क्या क्या कुछ।
कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई॥

—"ग़ालिब" देहलवी

फिर सुनाऊंगा मुद्दआ अपना।
सुन ले मेरी खुदा करे कोई॥

—"अज़ीज़" लखनवी

× × ×

रोक लो गर ग़लत चले कोई।
बख्श दो गर ख़ता करे कोई॥

—"ग़ालिब" देहलवी

कहते हैं हम नहीं खुदा है करीम।
क्यों हमारी ख़ता करे कोई॥

—"दाग़" देहलवी

× × ×

मर गया कहके ये मरीज़े फ़िराक़।
अब न वादा वफ़ा करे कोई॥

—"अज़ीज़" लखनवी

जब्र सह लें और सब्र भी कर लें।
करके वादा वफ़ा करे कोई॥

—"आज़ाद" कलकत्ता

× × ×

जब तवक्क़ा ही उठ गयी 'ग़ालिब'।
क्यों किसीका गिला करे कोई॥

—"ग़ालिब" देहलवी

इस गिलेको गिला नहीं कहते।
गर मज़ेका गिला करे कोई॥

—"दाग़" देहलवी

× × ×

मुंह लगाते ही "दाग़" इतराना।
लुत्फ़ है फिर जफ़ा करे कोई॥

—"दाग़" देहलवी

मेरी सूरत जो देख ले आकर।
क्यों किसी पर जफ़ा करे कोई॥

—"आज़ाद" कलकत्ता

× × ×

इब्न मरियम हुआ करे कोई।
मेरे दुखकी दवा करे कोई॥
चाल जैसे कड़ी कमांका तीर।
दिलमें ऐसेके जा करे कोई॥
न सुनो गर बुरा कहे कोई।
न कहो गर बुरा करे कोई॥
कौन है जो नहीं है हाजतमन्द।
किसकी हाजत रवा करे कोई॥

– "ग़ालिब" देहलवी

इस जफ़ापर तुम्हें तमन्ना है।
कि मेरी इल्तजा करे कोई॥

—"दाग़" देहलवी

अब न मेरी दवा करे कोई।
हो सके तो दुआ करे कोई॥

—"अज़ीज़" लखनवी

दर्दकी क्या दवा करे कोई।
दिलको क्यों बेमज़ा करे कोई॥
राहे उल्फ़त कभी न तय होगी।
ज़िन्दगी भर चला करे कोई॥
आप तो हाथमें मलें मेंहदी।
दस्ते हसरत मला करे कोई॥
बुझ गयी शमअ सुबह यह कहकर।
यों ही कब तक जला करे कोई॥

—"आज़ाद" कलकत्ता

१४

आज हालत है कुछ बुरी दिलकी



आपने क़द्र कुछ न की दिलकी।
उड़ गई मुफ्त में हँसी दिलकी ॥
याद हर हाल में रहे वह मुझे।
अलग़रज़ बात रह गई दिलकी ॥
मिल चुकी हमको उनसे दादे वफ़ा।
जो नहीं जानते लगी दिलकी ॥
चैनसे महवे ख़्वावे नाज़ हैं वह।
वेकली हमने देख ली दिलकी ॥
उनसे कुछ तो मिला, वह ग़म ही सही।
आबरू कुछ तो रह गयी दिलकी ॥
मर मिटे हम न हो सकी पूरी।
आरज़ू तुम से एक भी दिलकी ॥
वह जो विगड़े रक़ीवसे "हसरत"।
और भी वात वन गयी दिलकी ॥

—"हसरत"

तुम तो करते हो दिल्लगी दिलकी।
क्या मिटाओगे बेकली दिलकी॥
जान ले लेगी दिल्लगी दिलकी।
खूं रुलायेगी ये लगी दिलकी॥
अहद था उनके घर न जाने का।
हाय बेताबी ले चली दिलकी॥
बेखुदी में बता दिया मैंने।
बात ज़ालिमने पूछ ली दिलकी॥
जा उतारा परी को शीशेमें।
वह जो आये तो बन पड़ी दिलकी॥
हम से पूछो कि हम पै बीती है।
आप क्या जानें बेकली दिलकी॥
हम वह दर्द आशना हैं दिल देकर।
मोल लेते हैं दिल्लगी दिलकी॥
मेरे फ़िकरे पै आके ग़ैरों से।
वह जो बिगड़े तो बन पड़ी दिलकी॥
तेरी हसरत न होगी जब दिलमें।
कौन देखेगा बेकसी दिलकी॥
किसकी बातोंमें आके अय 'बेदम'।
उनको सूझी है दिल्लगी दिलकी॥

—"बेदम" गयावी

निकली ख्वाहिश न एक भी दिलकी।
दिलमें हसरत ही रह गयी दिलकी॥
देखें किस तरह रात कटती है।
आज हालत है कुछ बुरी दिलकी॥
दिल मेरा लेके क्यों नहीं देते।
गर नहीं आपको कमी दिलकी॥
लाओ दे दो हमें हमारा दिल।
नहीं अच्छी यह दिल्लगी दिलकी॥

—"मुश्ताक़" पटना

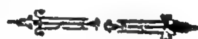
जो उड़ाता हो दिल्लगी दिलकी।
आके देखे वह बेकली दिलकी॥
तज़किरा करके उनसे उल्फ़त का।
बात खो दी रही सही दिलकी॥
सर्द आहोंने कर दिया ठंडा।
आग लेकिन नहीं बुझी दिलकी॥
ज़ुल्फ़ बिगड़ी तो बन गयी लेकिन-
बात बिगड़ी नहीं बनी दिलकी॥
राहमें उससे लड़ गयीं आँखें।
हाय क़िस्मत कहां लड़ी दिलकी॥
याद करते ही दिल भी जा पहुंचा।
उम्र होगी बहुत बड़ी दिलकी॥

दिलकी हसरत ही दिलकी दुनिया है।
दिलके हाथों है ज़िन्दगी दिलकी ॥
याद आता है रूठना उनका।
वस्लकी शबको आजिज़ी दिलकी ॥
फूल हँस-हँस के ज़ख्मे दिल होंगे।
खिलके रह जायेगी कली दिलकी ॥
दिल किसीका न फिर दुखाते तुम।
देख लेते जो बेकसी दिलकी ॥
दिल लगा करके हो गया ज़ाहिर।
जिन्दगी थी ये दिल्लगी दिलकी ॥
साथ गैरोंके तुम जो आते हो।
और बढ़ती है बेकली दिलकी ॥
जल के बोले शमां से परवाने।
यों बुझाते हैं हम लगी दिलकी ॥
दिल बुतोंसे लगाके अय 'आजाद'।
तू ने मिट्टी ख़राब की दिलकी ॥

—"आज़ाद"

१५

बुलबुल मरे तो फूल हो फ़स्ले बहार में ॥



धड़का सहर का है जो शबे वस्ल यारमें।
ग़म है ऐसी मेरी खुशीमें ख़िज़ा है बहारमें ॥
कहते हैं वस्लका तो नहीं मुझको इख़्तियार।
हां, वादा वस्लका है मेरे इख़्तियार में ॥
सय्याद और कुछ न हो इतना तो हो लिहाज़।
बुलबुल मरे तो फूल हो फ़स्ले बहार में ॥
यों ही थे शोख़ और भी बेचैन हो गये।
रह रह के आप मेरे दिले बेक़रार में ॥
नामो निशां बताएं क़फ़स वालो क्या तुम्हें।
हम वह हैं जो असीर हुए हैं बहार में ॥
अच्छा ये ऐब चुन के निकाला है आपने।
फूलोंकी बू नहीं है दिले दाग़दार में ॥

कुछ और ही है शान तुम्हारे शवावकी।
गुलशनकी सैर हमने भी की है वहार में॥
कह दे ये मेरे वादा-फ़रामोश से कोई।
आंखें लगी हैं दरसे तेरे इन्तज़ार में॥

--"जलील" हैदरावादी

कलियां ये सुर्ख़ सुर्ख़ नही लाला ज़ार में।
मेंहदी लगी है दस्ते उरु से वहार में॥
इस वास्ते कि एक ही हो मेरी उसकी शक्ल।
मुंह देखता हूं आईनये रूये यारमें॥
आने दे आपमें मुझे एकदम तो वेखुदी।
वैठे हैं कवसे लोग मेरे इन्तज़ार में॥
ज़ो शोख-तव्य हैं वह झपकते नहीं कहीं।
विजली कटार खींच के आई हज़ार में॥
किस गुलका सूय गोरे ग़रीवां गुज़र हुआ।
फूले नहीं समाते हैं मुरदे मज़ार में॥

—'अमीर' मीनाई

× × ×

आलम को वेवसीने दिया इख्तियार में।
थर्रा गया जहां जो मैं तड़पा मज़ार में॥

दूभर किसीको यों नहीं होती है अपनी चीज़।
दिल इससे दे दिया कि न था इख्तियार में॥
एक एक रात में हुए दो दो चिराग़ गुल।
आंखें भी साथ दे न सकीं इन्तज़ार में।
पानी कभी है जोश ग़मे दिल कभी शरार।
आंसू रुके तो आग लगी जिस्म ज़ार में॥
दामनको छोड़ती हो नहीं ख़ाक लखनऊ।
मिटना है "आरज़ू" इसी उजड़े दयार में॥

—"आरज़ू" लखनवी

× × ×

आये हैं इस रविश से तेरे जलवः ज़ार में।
बिजली चमक रही है दिले बेक़रार में॥
आंखोंसे दम निकलते हुए देखता हूं अब।
चुपका खड़ा हुआ हूं तेरे इन्तज़ार में॥
अय बेख़बर न यूं किसी बेकसकी आस तोड़।
दुनियाय शौक़ है दिले उम्मीदवार में॥
अय पढ़नेवाले क्यों नहीं थमते हैं तेरे अश्क।
लिक्खा हुआ है क्या मेरे लौहे मज़ार में॥
क्या ढूंढ़ते हैं आप ज़रा सोचिये "अज़ीज़"।
दिल लेके आये भी थे कभी कूचे यार में॥

—'अज़ीज़' लखनवी

× × ×

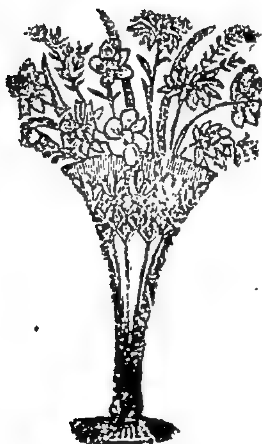
कुछ भी नहीं है अब तो दिले दाग़दार में।
वो दिन भी थे कि आग लगी थी बहार में॥
जीना है कुछ न खेल न मरना है दिल्लगी।
ये इख्तियारमें है न वो इख्तियार में॥
उनका दिया हुआ कहीं मैला क़फ़न न हो।
रखना मुझे ज़मीन से ऊंचा मज़ार में॥
उम्रे दराज़ मांगके लाई थी चार दिन॥
दो आरज़ूमें कट गये दो इन्तिज़ार में॥
'फरहत' अज़लके रोज जो पी थी शराबे इश्क़।
मस्ताना अभी तक हूं उसीके खुमार में॥

—"फ़रहत" रायगढ़

× × ×

घर करके तुम चले हो दिले सोगवार में।
क्योंकर क़रार आये दिले बेक़रार में॥
मैं चाहता तो हूं कि करूं इम्तिहाने यार।
कम्बख्त दिल भी तो हो मेरे इख्तियार में॥
हर पढ़नेवाला पढ़ते ही ग़श खाके गिर पड़ा।
क्या जाने लिख दिया है क्या लोहे मज़ारमें॥

आहें रुकीं तो आंख से आंसू निकल पड़े।
अब ज़ब्त भी नहीं है मेरे इख्तियार में॥
"आज़ाद" चन्द रोज़में मशहूर हो गये।
क्या रंग क्या वहार है "फूलोंके हार" में॥
—'आज़ाद' कलकत्ता।



१६

वही अरमान है दिलमें जो कल तुमने निकाले हैं

जिगर थामे हुए बैठे हैं जितने सुनने वाले हैं।
मेरे पुर दर्द नाले भी बड़े बेदर्द नाले हैं॥
नज़ाकतकी जो लेते हैं, हमारे देखे भाले हैं।
वह ऐसे हैं कि लाखों अहदो पैमां तोड़ डाले हैं॥
यहां हर शब फ़लक है अपने दिलके नाले हैं।
हज़ारों तीर हमने एक तरकश से निकाले हैं॥
खुदाके सामने कह दें ये बुत सब देखे-भाले हैं।
तुम्हारे मुंह लगे ये कब कहीं चुप रहने वाले हैं॥
तुम्हारा वादा सच्चा, कौल सच्चा और तुम सच्चे।
मगर इससे वह क्या खुश हो जिसे जीनेके लाले हैं॥
टपकती जाती हैं बूंदें लहूकी चश्म मजनूं से।
कहीं छालोंमें कांटे हैं कहीं कांटोंमें छाले हैं॥

जिसे मारा तेरी तेगे निगाहे नाजने मारा।
खुदा लगती कहेंगे हम भी एक दिन मरनेवाले हैं॥
बुतोंमें भी हजारों चाँदके टुकड़े नजर आये।
खुदाने नूरके सांचेमें क्या क्या पुरजे ढाले हैं॥
कोई क्या जाने क्या चुनती है लैला अपने पलकोंसे।
ये वह कांटे हैं जो मजनूंके तलुवोंसे निकाले हैं॥
जुनूंके दिन चले कांटे फफोले फोड़ लें दिलके।
ग़नीमत है जो तलुवों में मेरे दो चार छाले हैं॥
झिझकते आज क्यों हो क्या कोई बेगाना बैठा है।
वही अरमान हैं दिलमें जो कल तुमने निकाले हैं॥
मुहब्बतने बुते बेदर्द से ये कहलवा छोड़ा।
कि वह जीते रहें यारब जो हमपर मरने वाले हैं॥
मजेकी चीज क्या है अय जूनूं तू फैसला कर दे।
खटक कहती हैं कांटे हैं, टपक कहती है छाले हैं॥
तसद्दुक उसकी कुदरतके कि जिसने मेहरबां होकर।
तुम्हारे वस्लके अरमां मेरे दिलसे निकाले हैं॥
तमाशा देखिये उनमें जमानेकी दुरंगी का।
जो गोरी गोरी सूरत काली काली जुल्फों वाले हैं॥
बिछी हैं ख़ाक पर सब धज्जियां जेबो गरेबां की।
जूनूं तेरे लिये हमने नये रस्ते निकाले हैं॥

"ज़लील" ऐसे भी दो ही चार निकलेंगे ज़मानेमें।
वुतों को घूरते हैं और फिर अल्लाह वाले हैं॥

—"जलील" लखनवी

असर वाले जिन्हें कहते हैं सब क्या ये वह नाले हैं।
कि अव मेरी जबांसे ताबदिल छाले ही छाले हैं॥
खिले देखे न थे फूल इस क़दर मैंने गुलिस्तां में।
क़फ़सकी ज़िन्दगीने दाग़ जितने दिलमें डाले हैं॥

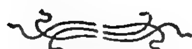
"अब्र" अन्सारी

निराले नाजके पाले ये कैसे हुस्न वाले हैं।
ग़ज़बके संग दिल हैं ये अज़ब अन्दाज वाले हैं।
ये आंखें हैं तुम्हारी या कि मस्तानोंकी हसरत है।
शरावे नाज़के साक़ी ये दो लबरेज प्याले हैं॥
तुझे जो देख लेता है वही बेताब होता है।
तेरी चितवनके घायल अपना-अपना दिल संभाले हैं॥
मजा कांटों पै चलनेका कोई पूछे मेरे दिल से।
किसीके पांवमें होंगे तो मेरे दिलमें छाले हैं॥
ग़ज़बमें जान है 'फरहत' किसे रोकूं किसे थामूं।
मेरी आहोंसे बढ़कर ये मेरे पुरदर्द नाले हैं॥

— 'फरहत' रायगढ़

बड़े सामानसे अय जां तेरा दीवाना निकला है।
कि आगे पीछे फौजें अश्क है पुरदर्द नाले हैं॥
मजा आता है मयखानेका हमको सैरे गुलशनमें।
जो सच पूछो तो एक-एक फूल एक-एक मयके प्याले
कलेजा चीर कर देखे अगर कोई तो क्या देखे।
तपे फुरकतसे सीनेमें यहां छाले ही छाले हैं॥
ये काले काले टुकड़े अब्रके क्या रंग लाये हैं।
नशेमें झूमने लगते हैं जितने पीने वाले हैं॥
तसव्वरमें भी आना तो हयाको साथ ले आना।
सितम ये है कि सितम भी निराले ढब निकाले हैं॥
रुला दो हमको हँस-हँसकर बना दो हमको दीवाना।
हमें तुम जो बना दोगे वही बन जाने वाले हैं॥
दिखाकर अब्रुए मिजगां हमें 'आजाद' कहते हैं।
संभलना इनसे मुश्किल है, ये खञ्जर हैं ये भाले हैं॥

—"आज़ाद" कलकत्ता



१७

यारकी गली



जीते जी कूचये दिलदारसे जाया न गया।
उसके दीवारका सरसे मेरे साया न गया॥

—"मीर" तक़ी

तेरी गलीसे निकलते ही अपना दम निकला।
रहे हैं क्यों गुलिस्तांसे अन्दलीब जुदा॥
तेरे कूचेको वह बीमारे ग़म दारूलशफा समझे।
अजलको जो तबीब और मर्गको अपनी दवा समझे॥

—"ज़ौक़"

क्या जज़्बे शौक़ है कि हवा जिस तरफ की हो।
सीधा चले गुबार मेरा कूए यार को॥

—"नासिख़"

रखते न थे चमनमें जो पांव फ़र्श गुल पर।
तेरी गलीमें अब वह कांटों पै लोटते हैं॥

कूय कातिलमें गुजर आसां नहीं।
आदमी तलवार पर क्योंकर चले॥

—'अमीर' मीनाई

कट गये, मिट गये, बरबाद हुये, क्या न हुआ।
तेरे कूचेसे तेरे चाहनेवाले न गये॥

—'अख्तर' मीनाई

जिस तरह मौजें करे सहने गुलिस्तांमें नसीम।
यों तड़पते लोटते हम कूय क़ातिलमें रहे॥
सबा क्या खिलायेगी दिलकी कली।
तुम्हारी गली को हवा चाहिये॥

—'जलील'

दिलचस्प हो गयी तेरे चलनेसे रहगुजर।
उठ-उठके गर्दे राह लिपटती हैं राहसे॥
बाद मुरदन ही निकल जाय मेरी हसरते दिल।
काश तेरी ही गलीमें मेरा मदफ़न हो जाय॥

—'कौसर'

उस गलीमें हम तो क्या खुरशेद भी।
डरके मारे कांपता थर-थर चले॥

—'ज़फ़र'

बुतोंके कूंचेसे हम दिलफिगार होके चले।
शिकार करनेको आये शिकार होके चले॥

न उट्ठे मरके भी ऐसे तेरे कूचेमें हम बैठे।
मुहब्बतमें अगर निकले तो हम साबित कदम निकले॥
आफरीं "दाग़" तुझे खूब निबाही तूने।
महरवा कूचये दिलदारसे मरकर निकला॥

—"दाग़" देहलवी

'कातील' आओ चलें हम भी वहां जायेगा जो कोई।
वह होकर सुर्खरू फिर कूचये कातिलसे निकलेगा॥

—'कतील'

न है अकसीर की ख्वाहिश न शौके कीमिया मुझको।
मयस्सर हो इलाही खाक कूए दिलरूबा मुझको॥

—'आसी'

जो गया कूचेमें उसके न फिरा इधरको।
अब सबा जाती तो है आइयो डरते डरते॥

—'मीर' दर्द

ज़मीनों आसमांका फासला है।
वह हैं बाम पर और हम हैं गलीमें॥
चलते चलते राह अकसर राह चलते थम रहे।
मरने जीनेका किसी कूचेमें सामां देख कर॥

—"नूह" नारवी

बेखतर कूचये क़ातिलमें चले आते हैं।
हज़रते दिलको है शाबाश कि डरते भी नहीं॥
मदफ़ून तेरे कूचेमें हैं दिल जला कोई।
चिनगारियां हैं आगकी गर्दे जमीं नहीं॥
और मरनेकी जगह क्या नहीं मिलती कोई।
तेरे कूचेके सिवा इश्क़के बीमारों को॥

—"शम्स"

उसके कूचेसे जो हो करके जनाज़ा निकला।
बोले अग़ियारसे हंसके, ये तमाशा क्या है॥
शामत आयी है हज़रते दिल की।
कूय जानांमें फिर चले, अफसोस॥

—"आजाद" कलकत्ता



१८

जवानी



कह रही है फूलसे गालों पै सुर्खीकी नमूद ।
दूर तिफ़ली हो चुका अहदे शबाब आनेको है ॥

* * *

चाहनेवालोंको तुम भूल न जाना उस वक्त ।
जब लड़कपनसे हम आगोश जवानी हो जाय ॥

—"जलील"

कहते हैं आये जवानी तो ये चोरी निकले ।
मेरे जोबनको लड़कपनने छुपा रखा है ॥

* * *

उड़ा ले जाते हैं आशिक़के दिलको सीनाज़ोरीसे ।
ग़ज़बके दो उचक्के भेषमें जोबनके बैठे हैं ॥

* * *

खुल गया जोबन तो अस्मतसे हयाने ये कहा ।
एक अंगड़ाई से हम दोनोंकी रुसवाई हुई ॥

*　　　　　*　　　　　*

ग़फ़लतमें न खो शबाब अय दिल।
ये रात जान है उम्र भर की॥

† † †

कहता है जवानीमें ये उस शोख़ की जोबन।
हमसे न रहा जायगा इस तंग क़बा में॥

*　　　　　*　　　　　*

ख़याल आता है पीरीमें जवानी ख़्वाब थी गोया।
पलक पीछे झपकती है ये दिन पहले गुज़रते हैं॥

—'अमीर' मीनाई

मुझे मिटा तो दिया क़त्ल अहदे पीरी के।
सलूक और दो रोज़ा शबाब क्या करता॥
पड़े न होते जो गफ़लत के "आरज़ू" पर्दे।
ख़ुदा ही जाने ये जोशे शबाब क्या करता॥

-- "आरज़ू" लखनवी

अदा आई,जफ़ा आई, ग़रूर आया हिजाब आया।
हज़ारों आफ़तें लेकर हसीनोंका शबाब आया॥
तबीयतमें हया आई निगाहोंमें हिजाब आया।
लड़कपनकी जगह लेनेको अब उनका शबाब आया॥

*　　　　　*　　　　　*

बुरी शक्ल भी कर लेती हैं घर अच्छी निगाहोंमें।
ख़ुदा रक्खे जवानी को जवानी ऐसी होती है॥
ख़याले नेक व बद कुछ भी नहीं आता नहीं रहता।
जिसे कहते हैं दीवानी जवानी ऐसी होती है॥

—'नूह' नारवी

ये बात है बहारे चमन ही के वास्ते।
आता नहीं पलटके ज़माना शबाब का॥

× × ×

हर अदा मस्ताना सरसे पांव तक छाई हुई।
उफ़, तेरी काफ़िर जवानी जोश पर आई हुई॥

—'दाग़' देहलवी

नया नया जो किसी शोख़ पर शबाब आया।
उठाके आईना देखा तो ख़ुद हिजाब आया॥

\+ + +

करता हूं तोबा ख़ातिरे वायज़से आज फिर।
लेकिन किसीको मस्त जवानी नज़र में है॥

—'अज़ीज़' लखनवी

अच्छा हुआ शबाब का आलम गुज़र गया।
एक जिन चढ़ा हुआ था कि सरसे उतर गया॥

—'अज्ञात'

जवानीकी दुआ लड़कोंको नाहक़ लोग देते हैं।
यही लड़के मिटाते हैं जवानी को जवां होकर॥

—'अकबर' एलाहाबादी

तमन्नाएं हज़ारों और लाखों हसरतें लेकर।
बड़े सामान से अरमान वालोंका शबाब आया॥

× × ×

जिसको कहते हो ये जवानी है।
वह तो एक ख़्वाबे जिन्दगानी है॥
इश्क़ की बस यही हक़ीक़त है।
ये भी एक जोशे नौजवानी है॥
नेको बदकी तमीज़ खोती है।
क्या बुरी चीज़ ये जवानी है॥

—"आज़ाद" कलकत्ता



१६

इशारे बाग़में गुलचींसे कुछ सय्याद करते हैं।



असीराने कुहन पर वह नई बेदाद करते हैं।
क़फ़स करते हैं बन्द और कहते हैं आज़ाद करते हैं॥

—"जमील"

सरे महफ़िल कहीं खुद शिकवये बेदाद करते हैं।
हैं साज़े नग़मा गर छेड़ो तो हम .फरियाद करते हैं॥
गुलो बुलबुल की यारब ख़ैर हो रंग आज बेढब है।
इशारे बागमें गुलचींसे कुछ सय्याद करते हैं॥

—"अब्र"

ये अच्छा है तरफ़दार उनका हमको रोकने वाला।
कलेजा मुंहको आ जाता है जब फ़रियाद करते है॥

—"अफ़जल"

बिगड़ जायेंगे मुंहफट हैं बहुत ज़ख्मे जिगर अपने।
कभी चलनेमें नाहक़ ख़ञ्जरे बेदाद करते हैं॥

—"जाह"

सुबह तक रोज जिन्दां की हिला करती हैं दीवारें।
न जाने शबको क़ैदी किस तरह फरियाद करते हैं॥
क़फ़सपर मुंहको रखके दम बदम सय्याद रोता है।
असीराने कुहन इस दर्द से फरियाद करते हैं॥

—"मरहूम"

तरीके सब्रो खामोशी गुलों से सीख अय बुलबुल।
गरेबां फट गये हैं ज़ब्त यों फरियाद करते हैं॥

—"खुरशेद"

न जा अय दर्दे पहलू फिर कहां मैं तुझको पाऊंगा।
वह उठते हैं तो फिर दम भर में तुझको याद करते हैं॥
मसीहा हो अगर आओ कहो कुछ मेरी मय्यत पर।
नहीं कह दो कि हम सब कुछ योंही इरशाद करते हैं॥
है वक्ते निज़अ मेरा आ रही है आखिरी हिचकी।
ज़रा तो अय क़ज़ा दम ले वह मुझको याद करते हैं॥

—"ज़हीन"

बुला लेते हैं पास उनको जो उनको याद करते हैं।
ज़मींसे अर्श मिल जाता है जब फरियाद करते हैं॥

अदम में भी ख़याल आता है द चीज़ोंको हस्तीका ।
तुम्हारा हुस्न अपना इश्क अकसर याद करते हैं ॥

—"रशीद"

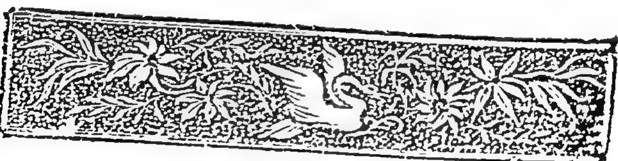
इबादत का तरीक़ा वह नया ईजाद करते हैं ।
बुतों के सामने बैठे खुदा को याद करते हैं ॥
हवाले हम तेरे जानेहज़ीं सय्याद करते हैं ।
खुद अपने हाथों अपनी जिन्दगी बरबाद करते हैं ॥
क़फ़ससे छूटकर जाऊं-तो-जाऊं किस तरह घरको ।
मेरे पर नोच कर कहते हैं लो, आजाद करते हैं ॥
तक़ाजाये अदब है, जो ज़ुबां से कुछ नहीं कहते ।
निकल पड़ते हैं आंसू जब तुम्हें हम याद करते हैं ॥
असर इतना तो दिखलाया है मेरे इस इश्क कामिलने ।
मैं जिनको याद करता था वह मुझको याद करते हैं ॥

—"गौहर" एटा

अजब क्या है, उजाड़ा बुलबुलोंने आशियां अपना ।
वह जिस के दिल में रहते हैं, उसे बरबाद करते हैं ॥
अभी तुमने नहीं देखा तड़पना मुर्ग बिसमिल का ।
कलेजा चाक जिस को देखकर सय्याद करते हैं ॥
किसी को भूल जाने का निराला ढब निकाला है ।
खबर देती हैं झूठी हिचकियां, वह याद करते हैं ।

सुना है, आज ताले खोलने आयेंगे जिन्दां के।
असीरों में किसे अब देखिये, आज़ाद करते हैं॥
शबे फुरकत की किस्मतका तुम्हीं अब फैसला कर दो।
तुम्हीं से हम तुम्हारे ज़ुल्म की फरियाद करते हैं॥
जला कर मार डाला है उसीका ये नतीजा है।
वह ठंडी सांस भरते हैं हमें जब याद करते हैं॥
न छूटे ताकयामत क़ैदिये गेसू न छूटेंगे।
कड़ी जंजीर में जकड़े हुए फरियाद करते हैं॥

—"आज़ाद"



२०

वह रो देते हैं अबभी ज़िक्र आता है जहां मेरा



वह दिल उमड़ा,वह हूक उठी, वह सांस उखड़ी वह दम टूटा।
वह घवड़ाकर उठा पहलूसे मेरे राज़दां मेरा॥
उठो अय दिलकी हूको! लब तक आओ लफ्ज़ बन जाओ।
कि है एक ना शनासे दर्द मुश्ताके बयां मेरा॥
चढ़ा कुछ और बदगोई से हुस्ने दास्तां मेरा।
खुदाकी शान है ओ बुत! ज़बां तेरी बयां मेरा॥

—"आरज़ू"

कहां, किस वक्त, कब रहता हूं खुद मुझको नहीं मालूम।
क़ज़ा आयेगी, भटकेगी, न पायेगी निशां मेरा॥

—"आजाद" कलकत्ता

कशिश गुलसे नहीं कुछ कम चमनके पत्ते-पत्ते में।
अब एक-एक शाखपर सौ-सौ जगह है आशियां मेरा॥

एवज़ तिनकोंके गर बसता किसी गुञ्चे में बू बनकर।
निगाहे बागवांमें क्यों खटकता आशियां मेरा॥

—"आरज़ू"

हवा इसको उड़ा ले जाय अब या फूंक दे आंधी।
हिफ़ाजत कर नहीं सकता मेरी जब आशियां मेरा॥
अभी तक फस्ले गुलमें एक सदाए दर्द आती है।
वहांकी खाकसे पहले जहां था आशियां मेरा॥

—"रवां" उन्नावी

क़फसमें उम्र गुजरी गिनते-गिनते तीलियां मेरी।
मुझे क्या आशियानेसे जला दो आशियां मेरा॥
क़फ़समें और ये सय्याद ने मुझपर सितम ढाया।
मेरी आंखोंके आगे लाके रखा आशियां मेरा॥

—"आजाद"

ये नाज़ुक हाथ, लंगरदार तेग़ और सख्त जां आशिक़।
ले बस रहने भी दो—तुम और लोगे इम्तेहां मेरा॥
जबां बेकार, नाज़ुक वक्त, क़िस्सा जिन्दगी भरका।
कहेंगी हाले दिल घुल-घुलके कबतक हिचकियां मेरा॥

—"आरज़ू"

वहीं से इब्तदाये कूचये दिल्दारकी हद है।
क़दम खुद चलते-चलते आके रुक जाये जहां मेरा॥

"रवां" सच है मुहब्बतका असर ज़ाया नहीं जाता।
वह रो देते हैं अब भी जिक्र आता है जहां मेरा ॥

—"रवां"

हदें इमकान की जिस दिन समझ लीं हो गया जाहिर ।
कहां तक है जमीं मेरी कहां तक आसमां मेरा ॥

—"आरज़ू"

ये कहकर रूह निकली है तने आशिक़से फ़ुरक़तमें ।
मुझे उजलत है बढ़ जाये न आगे कारवाँ मेरा ॥

—"रवां"

मेरी रूहे रवां कहने लगी ये तेग़ क़ातिलसे ।
खुदाके वास्ते बहने न देना कारवां मेरा ॥

—"आज़ाद"

मेरे बाद और फिर कोई नज़र मुझ-सा नहीं आता ।
बहुत दिनतक करेंगे सोग अहले खा़न्दां मेरा ॥

—"रवां"

अब उस बेगाना खू़ को "आरज़ू" अपना कहूं क्योंकर ।
जो कहनेमें नहीं मेरे वह दिल ही है कहां मेरा ॥

—"आरज़ू"

जमींपर बार हूं और आसमांसे दूर अय मालिक!
नहीं मालूम कुछ आखि़र ठिकाना है कहां मेरा ॥

—"रवां"

यहींपर गर्दिशे तक़दीरने लाकर बिठाया है।
तेरे दरपर न बैठूं तो ठिकाना है कहां मेरा ॥

—"आजाद"



२१

निगाहें मिलके रुखसत हो रही हैं अहले महफिल से ।

फड़ी चोटें मुहब्बतकी सही जाती हैं मुश्किल से ।
फ़ुग़ां बन कर हुई झनकार पैदा शीशये दिल से ॥
ये चुपके-चुपके आखिर तय हुआ क्या ग़मज़दः दिलसे ।
निगाहें मिलके रुख़सत हो रही हैं अहले महफिलसे ॥
ये ख़ूने बेगुनह किसका पसीना बनके वह निकला ।
टपकती है खिजालतपर खिजालत रूय कातिलसे ॥
मुझ ऐसा नातवां रफ्तार क्या देखे जमाने की ।
ये हाल अब है कि गरदिश आंखको होती है मुश्किलसे ॥
हुई बन्द आंख मजनूं को कहे ये कौन लैला से ।
कि वक्त अब आ गया बाहर निकल आनेका महमिलसे ॥

खबर दुनियां में फैलाने को मेरे खूने नाहक की।
गुबार उट्ठा है बनकर सुर्ख आंधी कुय क़ातिल से॥
हुई जब बेदिली फिर सैर-गाहे-दहर में क्या है।
उठा है कोई मिस्ले शमुअ रौनक लेके महफिलसे॥

—"आरजू" लखनवी

वह फरमाते थे ये अरमां तेरा निकलेगा मुश्किलसे।
जब आंखोंसे लड़ीं आँखें तो दिल खुद मिल गया दिलसे॥
निकल जायें मेरे दिलकी तमन्नायें मेरे दिल से।
मगर मुश्किल है राजी वस्लपर होगा वह मुश्किलसे॥
कोई पहलू रहा बाकी न अब इज़हारे उल्फत का।
वह दिल लेकर ये कहते हैं हमें चाहोगे किस दिलसे॥
हमारा खाक उड़ाना क्या यों ही बेकार जायेगा।
रहेंगे तेरे दिलमें हम निकल कर तेरी महफिलसे॥
खुदाई भरका जिम्मा तो ये बन्दा ले नहीं सकता।
कोई चाहे न चाहे आपको चाहूंगा मैं दिलसे॥
हमें अय आरजूये मर्ग अब क्या हुक्म होता है।
कज़ासे हम मिलें पहले कि पहले अपने कातिलसे॥
मुझे सब न्यामतें दुनियाकी मिल जावें जो मिल जावें।
तेरी जादू भरी आंखें मेरे हसरत भरे दिल से॥

—"नूह" नारवी

चले हैं राहवर ये मशविरा करते हुए दिल से।
कि अब अच्छा नहीं जिन्दा पलटना कूय क़ातिलसे॥

—"जवां" सन्दीलवी

ग़रज रहवरसे क्या मुझको मिला है जज़्बे कामिलसे।
कि जितना बढ़ रहा हूं हट रहा हूं दूर मञ्जिल से॥
हुसूले आरज़ूकी क्या तवक्क़ा ऐसे ग़ाफिल से।
जो दिलमें रहके भी वाकिफ नहीं बेताबिये दिलसे॥
दिले गुमगश्ताके मिलनेकी सूरत गर यही ठहरी।
लिये आते हैं थोड़ी ख़ाक हम भी कूय क़ातिलसे॥
उदासी है हर इक चेहरे पै हर पहलूमें सन्नाटा।
ख़ुदा जाने कोई क्या उठ गया है लेके महफ़िल से॥
ये इमकाने तरक्की आज है दावा ख़ुदाई का।
उसी दिलको जो कल तक था लहूकी बूंद मुश्किल से।
गुलो लाला पर आख़िर कर रहा है ग़ौर क्या गुलचीं।
वही ख़ून है जो टपका था कभी चश्मे अनादिल से॥
इलाही मंज़िले मक़सूद तक क्यों कर मैं पहुंचूंगा।
कि थक कर बैठ जाता हूं जो उठता भी हूं मुश्किलसे।
मुझे रसमी तवाज़ो पर यक़ीं मुतलक नहीं होता॥
मेरा दिल उस पै सदक़े जान क़ुरबां जो मिले दिलसे।

ग़ज़ब है, जलके परवानों का उनकी बज़्म में कहना ॥
रवां, या यों फ़िदा हो जाओ या उठ जाओ महफ़िलसे ।
—"रवां" उन्नावी

नज़ाकतके सबब उट्ठा न ख़ंजर दस्ते क़ातिलसे ।
लहू होकर वहे अरमाने दिलके चश्म बिसमिल से ॥
तमन्नायें मेरी फ़रियाद करती हैं मेरे दिल से ।
ये वह मौजें है जो टकरा करके रह जाती हैं साहिलसे ॥
तेरी ग़फ़लतसे क़ातिल रुक गया चश्मा उमीदोंका ।
न निकला म्यानसे ख़ंजर न निकली आरज़ू दिलसे ॥
इलाही किसका कूचा है यहां क्या होनेवाला है ।
कि पाये-नातवाने-आरज़ू उठता है मुश्किल से ॥
—"शरफ" ढाका

ये कुछ ऐसा मुअम्मा है, नहीं खुलता नहीं खुलता ।
नजर जब मिल गयी दिल किसलिये मिलता नहीं दिलसे ॥
नहीं मिलता जहांमें दर्द दिलका आशना कोई ।
लिपट जाता हूं मैं बेताब होकर अपने ही दिलसे ॥
तेरी तेगे सितमको किसने गम्माज़ी सिखाई हैं ।
बड़े नाज़ोंसे मिलती हैं अगर मिलती हैं बिसमिलसे ॥
ख़मोशी हर तरफ छाई है शमए वज़्म गिरियां हैं ।
वह उट्ठे भी तो रौनक़ लेके उट्ठे आज महफिलसे ॥
—"आज़ाद" कलकत्ता

२२

फलक न देखले आपसमें गुफ्तगू करते



असर हयात१ में होता जो उनके दिल पै ज़रा।
तो मरके हम न कभी उनसे गुफ्तगू करते॥

—"अफ़ज़ल" लखनवी

बिला दलील मुनासिब नहीं था दावये इश्क़।
दिखा के जज़्ब२ असर उनसे गुफ्तगू करते॥

—"अहसान" शाहजहांपुरी

जवाब शिकवयेः३ बेजा जो तुमको सुनना था।
गलेमें डाल के बाहें न गुफ्तगू करते॥

—"आरज़ू" लखनवी

ज़माने भरमें हैं मशहूर तूर४ की बातें।
किसी जगह कभी हम तुम भी गुफ्तगू करते॥

—"अब्र"

कलाम उनके दहन५ में था, वात इतनी थी।
न बढ़ती वात जो वह मुझसे गुफ्तगू करते॥

—"अब्र" रामपुरी

जो आते वह सरे वालीं६ तो उनको देखके हम।
दमे अखीर इशारोंसे गुफ्तगू करते॥

—"अब्र" लखनवी

खुदा ने उनको बनाया है सूरते तसवीर।
ज़वां दहन में जो होती तो गुफ्तगू करते॥

—"असग़र" शाहजहांपुरी

बुरा हो दिलका, ये कम्बख्त आह कर बैठा।
क़रीब था कि वह कुछ मुझसे गुफ्तगू करते॥

—"बशीर" मलीहाबादी

रहा न इश्कमें कुछ एतवारे नासेह७ भी।
कि आज गै़र से देखा है गुफ्तगू करते॥

—"बेबाक" शाहजहांपुरी

खुद करे न ये अफ़शाय८ राज़-उल्फ़त हो।
कोई सुने न मुझे उनसे गुफ्तगू करते॥

—"बलीग़" लखनवी

एक आह सर्द भरी उनको देखकर दमे निज़अ९।
क़लील१० वक्त में क्या और गुफ्तगू करते॥

—"बहार" लखनवी

दिमाग़ काहेको मिलता किसीसे फिर अय वर्क़ ।
कभी जो तुमसे वह उल्फ़तको गुफ्तगू करते ॥

—"वर्क़" लखनवी

किसीके सामने क्या शरहे आरज़ू करते ।
अकेला पाते जो तुमको तो गुफ्तगू करते ॥

—"बिसमिल" सन्डीलवी

मलाल थे जो हज़ारों शिकायतें लाखों ।
हुजूमे शौक़ में क्या तुम से गुफ्तगू करते ॥

—"तमोज़" लखनवी

वह हाल पूछते हैं निज़अ् में, यहां ये फ़िक्र ।
ज़रा जो सांस ठहरता तो गुफ्तगू करते ॥

—"जवां" सन्डीलवी

जो उनसे कहते न कुछ जब्त आरज़ू करते ।
कलेजे से मुझे लिपटा के गुफ्तगू करते ॥

—"हिजाब" (पर्दानशीं) शाहजहांपुरी

तेरे दहन से अगर एक 'हां' निकल जाता ।
तो आज ख़ाक के पुतले भी गुफ्तगू करते ॥

—"दिल" लखनवी

दिले हज़ीं की हमारे अगर ख़बर होती।
तो आप रूठके ऐसी न गुफ्तगू करते॥

—"रवां"

किसीकी हसरते दीदार का न होता खूं।
उठा के परदा अगर आप गुफ्तगू करते॥

—"सैफ़" शाहजहांपुर

भरा था दिल ये गिले से ज़बां को रोकलिया।
मलाल और बढ़ाते जो गुफ्तगू करते॥

—"सुलतान" बिलग्रामी

ये आरज़ू है कहीं बैठ कर फ़राग़त से।
हम और आप किसी रोज़ गुफ्तगू करते॥

—"शब्बीर" मलीहाबा

वह एक और क़यामत है, मुद्दई१४ लाखों।
जो चुप न रहते तो किस किससे गुफ्तगू करते॥

—"शोहरत

सितम ये तारों भरी रात और सन्नाटा।
हम और आप कुछ ऐसे में गुफ्तगू करते॥

—"अजीज" लखनवं

विसाल में भी ये धड़का लगा रहा शब भर।
फ़लक़ न देख ले आपस में गुफ्तगू करते॥

—"शायक़" सन्दीलवी

मिसाल-शमूअ तेरी बज़्म में ख़मोश हैं हम।
ज़बान काम जो देती तो गुफ्तगू करते॥

—"कामिल" सन्दीलवी

गुज़र गये हमें बरसों ये आरज़ू करते।
कि तुमसे प्यारकी ख़िलवत१५में गुफ्तगू करते॥

—"मुश्ताक़" लखनवी

न हो सका गिलये१६ जुल्म बाद अहदे वफ़ा।
ज़बान दे के उन्हें ख़ाक गुफ्तगू करते॥

—"नश्तर" लखनवी

ये सोज़े दिल है कि अल्लाह रे क़यामत है।
ज़बान शमूअ की जलती है गुफ्तगू करते॥

—"आज़ाद" कलकत्ता

२३

नीति-उपदेश



नफ़सकी आमदो शुद्का
नतीजा देखिये क्या हो।
थपेड़े हैं हवा के और
चिराग़े ज़िन्दगानी हैं॥

आरामके थे साथी क्या क्या
जब वक्त पड़ा था कोई नहीं।
सब दोस्त हैं अपने मतलबके
दुनियामें किसीका कोई नहीं॥

जो बाग़ था कल फूलोंसे भरा
अठखेलियोंसे चलती थी सदा।
अब संबुलो गुलका ज़िक्र तो क्या
ख़ाक उड़ती है उस जा कोई नहीं॥

कल जिनको अंधेरेसे था हज़र
रहता था चिरागाँ पेशे नज़र।
एक शम्अ जला दे तुरबतपर
जुज़ दाग़ अब इतना कोई नहीं॥

क़त्ताले जहां माशूक़ जो थे
सूने हैं पड़े मरक़द उनके।
या मरनेवाले लाखों थे या
रोनेवाला कोई नहीं॥

दो चश्म बसीरत तो देखे
किस घरमें नहीं जलवे उसके।
ज़ाहिरके हैं ये सारे झगड़े
कावा न कलीसा कोई नहीं॥

गुलगश्तमें दामन मुँह पै न लो,
नरगिससे हया क्या है तुमको।
उस आंखसे परदा करते हो,
जिस आंखमें परदा कोई नहीं॥

अय 'आरज़ू' अबतक इतना पता
चलता है तेरी बरबादीका।
जिससे न बगूले हों पैदा
इस तरहका सहरा;कोई नहीं॥

—"आरज़ू" लखनवी

नफ़सकी आमदो शुदका नतीजा देखिये क्या हो।
थपेड़े हैं हवाके और चिरागे ज़िन्दगानी है॥

* * * *

रहस्ये मुल्के अदमको क़ब्रतक पहुंचा देवें।
बस यहींतक जानते थे लोग मंजिलका पता॥
मिल ही जायेगा किसी दिन कूचे क़ातिलका पता।
पूछते गछते चले जाते हैं मंज़िलका पता॥

* * * *

समंदरसे सिवा आंखोंको हर क़तरा नज़र आया।
तिलस्मे राह कुदरतका हरेक ज़र्रा नज़र आया॥
हटी चिलमन तो वालोंमें निहां चेहरा नजर आया।
उठा जब एक परदा दूसरा परदा नज़र आया॥

* * * *

खुद जलके मेरी क़ब्रपर क्या देता रौशनी।
मुहताज दूसरोंका चिरागे मज़ार था॥
चेहरेसे जब लहदमें हटाया गया क़फ़न।
आंखें खुली हुई थीं तेरा इन्तज़ार था॥

* • * *

यहांसे साजो सामांके लिये क्यों इतनी कोशिश है।
"जवां" दुनियाय फ़ानीमें तुझे कै रोज़ जीना है॥

* * * *

ख़िज़ां जब आयेगी पैरोंसे रौंदे जायेंगे।
अभी बहारमें हँसते हैं फूल गुलशनके॥

* * * *

अदममें रूह ज़र्रोंमें लहू तुरबतमें क़ालिब है।
गलेपर फेरकर ख़ञ्जर लगा क्या हाथ क़ातिलके॥

* * * *

बीचमें शमअ परवानोंकी लाशें इर्द गिर्द।
सोते हैं मक़तूल क़ातिल ख़ौफ़से बेदार है॥
दिलको ओ ठुकरानेवाले करले अपने कान बन्द।
सुन नहीं सकता है इस शीशेमें वह झन्कार है॥
ग़म करेगा कौन अपना दम निकल जानेके बाद।
ज़िन्दगी जबतक है एक एक सांस मातमदार है॥

* * * *

शरीके हाल किसका कौन होगा दारे दुनियामें।
ज़रा संभले हुए अय दिल कि बेगानोंकी महफ़िल है॥

—"जवां" सन्दीलवी

जानेवाले चल दिये दुनियाकी वस्ती छोड़कर।
रोनेवाले एक दिन क्या उम्र भर रोया करें॥

* * * *

हँसीके साथ आंखोंमें छलक आते हैं आंसू भी।
कि हर राहतके साथ एक माजराये ग़म भी शामिल है॥

* * * *

एक शीशा है मगर देखिये किस शानका है।
कोई पत्थर तो नहीं दिल ही तो इन्सानका है॥

* * * *

ग़म है जो रूहकी अज़मतका पता देता है।
और इन्सानको इन्सान बना देता है॥

—"रवां" बरेलवी

नशेमनके उजड़नेका नहीं ग़म शर्म इसकी है।
कि आफ़त चार तिनकोंकीबदौलत आई गुलशनपर॥

* * * *

पलटकर अब न आयेंगे अदमसे जानिबे हस्ती।
वतनने हमको छोड़ा हम वतनको छोड़े जाते हैं॥

* * * *

दफ्न् करके हो गये रुख़सत ये सब कहते हुये।
इससे जो आगे है वह समझी हुई मंज़िल नहीं॥

—"नाविक" कलकत्ता

आबरू वह है जिसमें पानी हो।
आब उतरा तो ख़ाक मोती है॥

*　　　*　　　*

भेद दुनियाका हमने कब पाया।
जब नज़रसे गुज़र गयी दुनिया॥

*　　　*　　　*

हसरतें जितनी बढ़ेंगी रंज बढ़ते जायेंगे।
रफ़्ता रफ़्ता आरज़ूओंको घटाना चाहिये॥

"आज़ाद" कलकत्ता

२४

हास्य

शौक़ लैलाये सिविल सर्विसने मुझ मजनूनको।
इतना दौड़ाया लंगोटी कर दिया पतलूनको॥

+

कचहरियोंमें तो पुरसिश है ग्रैजुएटों की।
सड़क पै मांग है कुलियों की और मेटों की॥
नहीं है क़द्र तो बस इल्मो दीन तक़्वा की।
ख़राबी है तो फ़क़त शेख़जीके बेटों की॥

+

परदादर की राय सुन कर बीवियां कहने लगीं।
अब हमारे वारिस ऐसे ही निगोड़े रह गये॥

+

कमसिन मिसोंसे आप किसी शब न चूकिये।
जेबी घड़ी हैं ये इन्हें हर रोज कूकिये॥

—"अकबर" एलाहाबादी

बसते हैं हिन्दमें जो खरीदार ही फ़क़त।
आग़ा भी लेके आये हैं अपने वतनसे हींग॥

+

शेख़ साहब भी तो परदेके कोई हामी नहीं।
मुफ्तमें कालेजके लड़के उनसे बदज़न हो गये॥
वाज़में फरमा दिया कल आपने ये साफ-साफ।
परदा आखिर किससे हो जो मर्द ही ज़न हो गये॥

+

थे वह भी दिन कि खिदमते उस्तादकी एवज़।
दिल चाहता था हदियये दिल पेश कीजिये॥
बदला ज़माना ऐसा कि लड़का पस अज़ सबक़।
कहता है मास्टरसे कि बिल पेश कीजिये॥

—"सर इक़बाल"

* * *

मार डण्डों फोड़ देता इश्कके इज़हार पर।
शुक्र कर मजनूं कि लैलाके कोई भाई न था॥

❀

क़ैदमें सय्यादो गुलचींने सतानेके लिये।
बागमें टू लेट लगाया आशियानेके लिये॥

—"हकीम" अन्सारी

*　　　*　　　*

बदले वह सब तरीके यारोंने जिन्दगी के।
शरबत पै खाक डाली होटलमें चाय पी के॥

×

डण्डेसे न खेलेगा कोई बैटके आगे।
क्या कद्र है कन्टोपकी अब हैटके आगे॥

+

क्योंकर निभेगी शेखसे लेडीकी रस्मो राह।
मोटासा है वह बांस ये पतली सी केन है॥

—"नूह" नारवी

‡　　　+　　　‡

ये तरक्की लार्ड कर्जनकी बदौलत हो गयी।
मूंछ किस गिनतीमें है दाढ़ी भी रुखसत हो गयी॥

×

औरतोंसे हिन्दमें अब दूर परदा कीजिये।
खूब है उनको खुले बन्दों फिराया कीजिये॥
आपके हाथों तरक्की जो न हासिल हो सकी।
अब मददसे औरतोंकी इसको पूरा कीजिये॥

—"मुश्ताक" सलोनी

\+ \+ \+

ज़िन्दगी जबतक रहे चुपचाप चन्दा दीजिये।
अपने हाथोंसे गलेमें अपने फन्दा दीजिये॥

\+

इन बुतोंके इश्कमें हमको मिला ये दाग़ है।
दिल हमारा क्या है ये जलियानवाला बाग़ है॥

—"बिसमिल" एलाहाबादी

\+ \+ \+

मुद्दतसे मर रहे हैं नयी रौशनी पै हम।
अब तक जला न लैम्प हमारे मज़ारमें॥

\+

भला उन लड़कियोंके हुस्ने कैरेक्टरका क्या कहना।
जिन्हें मिस साहबा स्कूलमें तालीम देती हैं॥

\+

पये नामाबरी अब पोस्ट आफिस हमको काफी है।
न क़ासिद़की तमन्ना है, न मतलब है कबूतर से॥

\+

गर नोट पास हो तो मिले साहिले मुराद।
अब बेड़ा पार होता है काग़ज़की नावसे॥

❋ ❋ ❋

—"मुहिब" दरियाबादी

जिसे हो नामकी ख्वाहिश वह इन्तजाम करे।
भलाई गैरकी हो जिससे हो सुबहो शाम करे॥
हम अपने जी से हैं खादिम वतनके घर घरके।
है वरना कौन जो 'आजाद' को गुलाम करे॥

❋

गनीमत लाख इज्जतसे मिले गर दाल रोटी है।
गई इज्जत तो फिर क्या है, न कीमा है न बोटी है॥
अगर 'आजाद' हैं हम तो खुशी इससे सिवा क्या है।
सिवा धोतीसे है तनपर जो खद्दरकी लंगोटी है॥

—"आजाद" कलकत्ता



जीवन-चरित्र

"जनाब आरज़ू" लखनवी



उर्दू काव्य-जगतमें जिन आधुनिक कवियोंका नाम बड़ी श्रद्धा और भक्तिसे लिया जाता है उनमें हजरते आरज़ू का नाम एक ख़ास स्थान रखता है। आपका नाम सैयद अनवर हुसैन उर्फ मंझो साहब और तख़ल्लुस "आरज़ू" है। उर्दू-कविताकी जन्मभूमि लखनऊमें सन् १८७१ के लगभग आपका जन्म हुआ था। इस समय आपकी उम्र ६२ वर्ष की है। शायरीका शौक तेरहवें साल से ही आरम्भ हो गया था। अपने पिता हज़रत यास और भाई मीर यूसुफ़ हसन 'क़यास'को शेर कहते देख आपकी तबीयत कब रुकती थी। सबसे छिपा कर शेर कहना आरम्भ किया। उसी ज़मानेकी एक सामान्य

घटनाने आपका जीवन-स्रोत ही बदल दिया। कहते हैं कि किसी शागिर्दने 'क़यास' महोदयको एक ग़ज़ल इसलाहके लिये दी थी। क़यास साहब उसी ग़ज़लकी इस्लाह देनेमें चिन्तित थे। आपने भी शेर पढ़ा और फौरन बोले—भाई साहब, अगर ये शेर इस तरह हों तो कैसा हो? क़यास साहबने इनकी सूरत देखा और शेरको वैसा ही बना दिया। शामको कयास साहबने 'यास' महोदयसे इसका जिक्र करते हुए इसलाह की हुई ग़ज़ल उनके सामने रख दी। "यास" साहब ज़माना देखे हुए थे, ताड़ गये कि लड़का होनहार है। आपने "आरज़ू" साहबको ले जाकर जनाब हकीम मीर ज़ामिन अली साहब 'जलाल' की शागिर्दीमें दाखिल करा दिया।

हज़रत आरज़ूने अपनी पहली ग़ज़ल जिस मुशायरेमें पढ़ी, वह नवाब मंझले आग़ाका मुशायरा था। मतला था—

"हमारा जिक्र जो जालिमकी अंजुमनमें नहीं।
जभी तो दर्दका पहलू किसी सुखनमें नहीं।"

एक और शेर था—

शहीदे नाज़की महशरमें दे गवाही कौन।
कोई लहूका भी धब्बा मेरे कफ़नमें नहीं॥

यह वह ज़माना था जब कि लोग किसी होनहारको बढ़ते देख तरह-तरहसे उसके दिलमें उमंग पैदा करनेको

चेष्टा किया करते थे। होनहार समझ ऐसे ही एक बुजुर्गने आपको एक मिसरा दिया कि अगर इसपर दस बरसमें भी मिसरा लगा दो तो मैं तुम्हें शायर मान लूं। मिसरा था—

"उड़ गई सोनेकी चिड़िया रह गये पर हाथ में।"

आपने फौरन मिसरा लगा कर बेमानी शेरको मानेदार शेरमें तबदील कर दिया। गिरह लगाई:—

"दामन उस यूसुफ़का आया पुरज़े होकर हाथमें।
उड़ गई सोनेकी चिड़िया रह गये पर हाथ में॥"

आपकी प्रतिभा देखकर अकसर उस्तादोंने भविष्य-वाणी की कि वक्त आनेपर यह लड़का उस्तादोंमें नाम पैदा करेगा। बचपनमें भी आपने जो कुछ कहा है, खूब कहा है—रंग जलाली हाथसे नहीं जाने दिया।

मुझको मेरी रविश मिटाती है।
पांवकी ख़ाक सर पै आती है॥

+

खुद कुशीका आप पर इलजाम धरते जायँगे।
हम तो मरते हैं मगर बदनाम करते जायँगे॥

+

दी है राहतके बहाने मुझे ईज़ा क्या क्या।
चुटकियां लेते रहे फांस निकाली न गयी॥

+

इधर फिर भी आना उधर जाने वाले।
अरे दिल के बेताब कर जाने वाले॥
मेरा सोग कैसा, तेरी शर्म रख ली।
ये चेहरे पै गेसू बिखर जाने वाले॥

+

है शमअ हाथमें, चेहरे पै जुल्फ, आंखोंमें अश्क।
अन्धेरी रातमें किसका मज़ार देखेंगे॥

* * * *

धीरे-धीरे आपकी रचनाओंमें पुख्तगी पैदा होती गयी और वक्तने आपको उस्ताद मानकर सम्मानित किया। आरज़ू साहबका एक दीवान "फ़ुग़ाने आरज़ू" के नामसे उर्दू में प्रकाशित हो चुका है, दूसरा छप रहा है। आपकी रचनाओंका एक संग्रह लखनऊ कीटकसाली जबानमें भी है। यह आपका खास रङ्ग है। इसमें उर्दू और हिन्दी-की पुट देकर एक ऐसी आम फ़हम ज़बान बना दी गयी है गोया पद्य नहीं गद्य पढ़ रहे हों। इधर एक अर्सेसे आप उर्दू और हिन्दीका झगड़ा मिटाकर एक ऐसी आम जबान-का जन्म दे रहे हैं जो न उर्दू हो और न हिन्दी-बल्कि हिन्दुस्तानी हो और जिसे हर शिक्षित अशिक्षित सभी अच्छी तरह समझ सकें। नमूना इस प्रकार है—

जो सामने अबतक आये नहीं,
क्यों ध्यानमें आये जाते हैं।
आंखोंसे अभी तक ओझल हैं,
और दिलमें समाये जाते हैं।
एक मरते हुएसे फेरके मुंह,
तुम उनसे रूठके बैठे हो।
ये तो है घड़ी ऐसी जिसमें,
रूठे भी मनाये जाते हैं।
जीना है तो दुख भी है सुख भी,
रोना भी है हँसना भी है यहां।
'बीन' एक ही होती है जिसपर,
सब राग बजाये जाते हैं॥

* * *

खिलना कहीं छिपा भी है चाहत के फूलका।
ली घरमें सांस और गलीतक महक गयी॥
मेरी सनक भी बढ़ती है उनकी हँसीके साथ।
चटकी कली कि पांव को बेड़ी खड़क गयी॥
जिसने उड़ा दी रातोंकी नींद और दिनका चैन।
जो ले न फिर भी "आरज़ू" उसकी ललक गयी॥

* * *

न सोचा न समझा न देखा न भाला,
जियो तुम कि चाहा जिसे मार डाला।

उलहने जो देते हैं पहले कहां थे,
किसीने न गिरते हुयेको सम्भाला ॥

इस अन्धेर नगरीमें वत्ती न ढूंढो,
जो कुछ है वह अपनी समझका उजाला ॥

† † †

आपने कई ड्रामें भी लिखे हैं जिनमें चाँद गहन, हुस्नकी चिनगारी और दिल जली वैरागिन नामक नाटक कलकत्तेकी सुप्रसिद्ध मैडन कम्पनी खेल भी चुकी है। आपकी लिखी 'निजामे उर्दू' उर्दू साहित्यमें अद्वितीय पुस्तक है। मनन करनेयोग्य है। हिन्दोस्तानमें आपके हजारों शागिर्द हैं। जनाव अल्लामा हकी 'पेश' अमरोही सैय्यद आल रजा साहव 'रज़ा' एडवोकेट, लखनऊ, जनाव मन्नी लाल साहब 'जवां' संदीलवी, 'शहीद' फिरंगी महली और 'नश्तर' सन्दीलवी, आदि वड़े ही प्रतिभावान शायरों-में हैं। इन पंक्तियोंके लेखकको भी आपके चरणोंमें थोड़ी-सी जगह मिल गयी है।



जनाब मन्नीलाल साहब "जवां" सन्दीलवी

हज़रत "जवां" सन्दीलवी



जनाब मन्नीलाल साहब 'जवां' सन्दीलवी जिला हरदोईके बड़े ही प्रतिभावान शायर हैं। पहले मीर मन्सब अली साहब "हुनर" से इसलाह लेते थे। उनकी मृत्युके पश्चात् बड़ी तलाशके बाद जनाब 'आरज़ू' लखनवीके शागिर्द हो गये। घरसे खुश थे। तबीयतमें आशिक़ मिज़ाजी कूट-कूट कर भरी थी। जवानीमें खूब ऐश किये। वक्तने पलटा खाया तो सिवाय शेरो शायरीके पासमें कुछ न रहा। फिर भी सन्तोष और जिन्दा दिली तबीयत न गयी। सन्दीलेसे कलकत्ते चले आये और खिदिरपुरमें रहने लगे। कई छोटी मोटी किताबें लिखीं जिनमें "खाकी पुतला" बड़ी ही करुणोत्पादक पुस्तक है। 'रुहे सुखन' नामका एक मासिक पत्र आपके सम्पादकत्वमें निकल रहा है। कविताके चन्द नमूने इस प्रकार हैः

दिलको ओ ठुकरानेवाले, कर ले अपने कान बन्द।
सुन नहीं सकता है इस शीशेमें वह झनकार है॥

नफ़स की आमदो शुदका नतीजा देखिये क्या हो।
थपेड़े हैं हवाके और चिरागे़ ज़िन्दगानी है॥

ф

मेरे ही सामने लेकर पटक देना मेरे दिलको।
मुझीसे टुकड़े चुनवाना मेरे टूटे हुए दिल के॥

ф

हमें इतना ज़माना कैदमें सैयादकी गुज़रा।
रिहा होकर न हम अपने सफीरोंकी ज़बां समझे॥

ф

खुद जलके मेरी क़ब्र पै क्या देते रौशनी।
मुहताज दूसरोंका चिराग़े मज़ार था॥
चेहरेसे जब लहदमें हटाया गया कफ़न।
आंखें खुली हुई थीं तेरा इन्तज़ार था॥

ф

अदममें रूह, ज़र्रों में लहू, तुरबतमें क़ालिब है।
गलेपर फेरकर ख़ंजर लगा क्या हाथ क़ातिलके॥

फूलोंकी डाली



बाबू जगत मोहनलाल साहब "रवां" एम० ए०, बी० एल०,

उन्नावी

कविवर "रवां"

—:o::o:—

बाबू जगतमोहन लाल 'रवां' एम० ए० एल० एल० बी० रहनेवाले उन्नावके हैं। शेरो शायरीका शौक बचपनसे ही पैदा हुआ। तबीयत शायराना थी। अकसर अपने हम-जोली बच्चोंसे मौज़ूं शब्दोंमें बातें करते थे। गेन्द खेलते खेलते बचपनमें आपने एक बार अपने साथीसे कहा—

ज़रा गेंद मेरा उठा लाइये।
फटे चीथड़े मुझको दिखलाइये॥

आपके जीवनमें ऐसे उदाहरण अकसर पाये जाते हैं। प्रकृतिकी ओर आपका झुकाव अधिक रहा। पाश्चात्य साहित्यका अच्छा अध्ययन किया है। फलसफा आपकी रचनाओंका मुख्य अंग रहा है। जिन्दगी और मौतकी समस्याको कहीं-कहीं इस खूबीसे सुलझाया है कि पढ़ते ही मुंहसे बेइख्तियार "वाह" निकल जाता है।

"मर्ग बे हंगाम कहते हैं जिसे आज अहले दर्द।
कल यही सूरत बदलकर जिन्दगी हो जायगी॥

×

न गुल हुई है, न शमअ हयात गुल होगी।
हजार बार योंही अंजुमनमें आयी है।"

धार्मिक पहलूपर प्रकाश डालते हुए कहते हैं—

"शुआये नूर ईमां दिल तक आते देर लगती है।
बड़ा दुशवारियोंसे रौशनी इस घरमें आती है॥"

कविवर "रवां" की रुबाइयां बड़े मार्केकी होती हैं। एक ख़ास रंग और नया पहलू लिये हुए होती हैं। दो-एक पाठकोंकी भेंट करता हूं।

हिर्सो हविस हयात फानी न गयी।
इस दिलसे हवाय कामरानी न गयी॥
है संगे मज़ार पर तेरा नाम "रवां"।
मर कर भी उमीदे जिन्दगानी न गयी॥

* * *

यह क्या कि हयाते जाविदानी क्या है।
पहले देखो जहाने फ़ानी क्या है॥
इस फिक्रमें हो कि मौत क्या शै है "रवां"।
ये भी समझे कि ज़िन्दगानी क्या है॥

शब्द-कोष



अ-आ

अजल – मृत्यु
अज़ल – सृष्टिके प्रारम्भका दिन
अंजुमन – सभा, महफिल
अता – दान
अदम – अभाव, परलोक
अब्र – बादल
अफ़ज़ा – शोभा देनेवाला
अफ़शा – प्रकट
अर्श – छत
अबस – नाहक़

अय्याम – दिन
अहल – लोग
आगाह – जानकारी
आग़ाज़ – प्रारम्भ
आज़ुर्दा – दुखी
आबोगिल – (पानी+मिट्टी) शरीर, काया
आस्तां – घर
आरिज़ – गाल
आहू – हिरन

इ-ई

इक़बाल—नेक, स्वीकार
इज़तिराब—दुःख, शोक
इन्तिहा—अन्त, सीमा
इबरत—उपदेश
इब्तिदा—आरम्भ
इल्तिफ़ात—दया, सहानुभूति, स्नेह
इसरार—रहस्य
इन्तक़ाम—बदला
ईज़ा—तकलीफ़

उ

उजलत—जल्दबाजी, घबराहट
उरियां—नङ्गा, बेपर्द
उस्तख़्वां—हड्डी
उस्तवार—मजबूत

ए-ऐ

एजाज़—करामात
एहसास—अनुभूति, अभिव्यक्ति

क

क़फ़स—पिञ्जड़ा, कारागार
क़ल्ब—दिल
कलीसा—मन्दिर
कैफ़—नशा

ख

ख

ख़लिश—टीस, वेदना

ख़िलवत—एकान्त

ख़ुम—शराबका मटका

ख़ुल्द—स्वर्ग

ख़िरामा—धीरे धीरे

ग

ग़मगुस्ता—दुःखी

गर्दूं—आकाश

गरेबां—गला (कुर्त्तेका)

गोर—क़ब्र

गिरियां—रोना

गोशा—कोना

गाह—कभी

च

चर्ख़—आकाश

चाह—कुंआ

चारः साज—धैर्य बंधानेवाला

ज

जज़्बः—भावना

जबीं—माथा

ज़ोफ़—कमजोरी

जज़र—भाटा, ज्वारका पतन

ज़िया—प्रकाश, ज्योति

त

तग़य्युर—काया पलट

तग़ाफुल—विस्मरण

तबस्सुम—मुसकराहट

तरजीह—बड़ाई

तवक़ुफ़—निछावर

तसद्दुक़—निछावर

ताबिश—चमक

तायर—पक्षी

तारीक—अन्धकार

तालिब – इच्छुक।

तौकीर—मान-सम्मान

द

दरमां—दवा

दयार – कूंचा

दहन—मुंह

दुख़्तर—बेटी

दहर—दुनिया

दुरख़्शां—प्रकाशित, उज्ज्वल

दोश— कन्धा

न

नक्श – निशान

नक़ीब—आवाज़ देनेवाला

नग़मः – राग

नसीम—हवा, (सवेरेकी)

नावक—तीर चलानेवाला

निज़अ—मृत्युके समय

निहां—छिपा हुआ

नरगिस—फूल, वह फूल जिसको उपमा आँखसे दी जाती है।

नौहःगर—रोनेवाला

प

पसे मर्ग—मृत्युके बाद

पशेमां—लज्जित

परस्तिश—पूजा

पाश—टुकड़ा

पिनहां—गुप्त

पैहम—लगातार

पैकार—लड़ाई

पुश्त—पीठ

फ

फ़ना—मौत, नाश

फ़रोज़ा—रौशन

फ़िगार—घायल

फ़िज़ा—शोभा

फ़ुग़ां—रुदन, आह

फ़ैज़—उपलब्धि

ब

बर्क़—बिजली

बक़ा—जीवन

बपा—जारी

बरहम—नाराज़गी

बालीं—सिरहाना

बाहम—आपसमें

बेदार—जाग्रत

बिरहनः—नंगा

म

मक़सूद—इच्छा, लक्ष्य
मख़मूर—नशीली, मत्त
महशर —प्रलय
महमिल—लैलाकी सवारी
मसरूर—आनन्द, मग्न
मिज़गां—पलकें
महव—तल्लीन
मुज़्तर—दुःखी
मुनव्वर—रौशन
मुसव्विर—चित्रकार

य

यास—निराशा

र

रक्स—नृत्य
रज़ा —सम्मति
रवां—चलता हुआ, जारी
राज़—भेद
राहत—आराम
रिन्द—शराबी
रुख़सार—गाल

ल

लहद—क़ब्र
लाग़र—कमज़ोर
लौह —तख़्ती
लैलोनिहार—रात दिन!

छ

व

वज्द्—आनन्दमग्न होकर झूमने लगना
वफ़ूर—विस्मृति
वहदत—एकता
वहशत – जंगलीपन
वादी—जंगल
विसाल—मिलन

श

शजर—पेड़
शबनम—ओस
शफ़क़—लाल
शबाब—यौवन
शफ़ा—व्याधिसे मुक्ति
शमीम—सुगन्धि
शम्स—सूर्य
शहाब—लाल रंग
शशद्र—विमुग्ध
शादां—ख़ुश
शोख़—चञ्चल
शोरिश—अस्थिर कर देनेवाली आह

स

सकूत—शान्त
सख़ुन—साहित्य (काव्य)
सदा—आवाज़
सरशार—मस्त
सरापा—सिरसे पैरतक
साहिल—किनारा
सेहर—जादू, प्रातः
सैलाब—बाढ़
सदफ़—सीप
सोज़—जलन

ज

ह

हजूम—भीड़

हरम—काबा

हश्र—प्रलयका दिन

हस्ती—जीवन

हिज्र—वियोग

हिलाल—पहली रातका चाँद



कोई रोये न रोये कब्रपर इक शम्आ रोती है।
कोई आये न आये रातको परवाना आता है॥

'रहबर' कलकत्ता

जरा सी जान है उसपर ये ज़ौके जां निसारी है।
हवाये शौकमें उड़ता हुआ परवाना आता है॥

'जौहर' कलकत्ता।

वह हँसकर शम्अकी जानिब बराबर देख लेते हैं।
रुखे रौशनके आगे जब कभी परवाना आता है॥

'फर्द' लखनवी।

तुम्हारे रूये रौशनपर मैं अपनी जान दे दूंगा।
सलामत शम्आसे बचकर कभी परवाना आता है॥

'शरफ' अजमेरी।

तड़पता लोटता यों आपका दीवाना आता है।
कि मर मिटनेको जैसे शम्अपर परवाना आता है॥

'माहर' फरीदी।

बज़ुज़ शम्आ लहद है कौन गिरियां करनेवालोंमें।
जो बहरे फातेहा आता है तो परवाना आता है॥

'अहमर'

न पूछ ऐ चारागर दो चार सांसें और बाकी हैं।
अजल सरपर खड़ी है मौतका परवाना आता है॥

है नाहक़ खूनका इलज़ाम तेरी शम्अ महफिल पर।
किसीकी आगमें जलनेको क्यों परवाना आता है॥

'नकी' लखनवी।

गुमां रखना गलत है शम्अ पर वेलाग जलती है।
हवा देनेको सहरासे परे परवाना आता है॥

'आर' वारकपुरी।

मज़ा आता है दिलको गर्म जव माशूक होता है।
शमा ख़ामोश होती है तो कव परवाना आता है॥
शवाव आने तो दो फिर चाहनेवाले हैं वहुतेरे।
शम्आ जलती है पहले तव कोई परवाना आता है॥
जिधर "आज़ाद" जाता हूं यही आवाज़ आती है।
उधर देखो, चिराग़े हुस्नका परवाना आता है॥

'आजाद' कलकत्ता।

× × ×

मगर उसको फ़रेवे नरगिसे मस्ताना आता है।
उलटती है :सफ़े गरर्दिशमें जव पैमाना आता है॥

'आतिश' लखनवी।

ये कह कह कर मुझे तरसाया शव भर मेरे साक़ीने।
ये खुम आया, ये शीशा आया, वो पैमाना आता है॥

'जौहर' कलकत्ता।

अजब अन्दाज़से साक़ी तेरा मस्ताना आता है।
झुका जाता है शीशा बज़्ममें पैमाना आता है॥
'फ़र्द' लखनवी।

कभी जब याद अय साक़ी तेरा मयख़ाना आता है।
तो गुलशनमें नज़र हर गुल मुझे पैमाना आता है॥
'साकिब' देहलवी।

सरे महफिल न पूछो कुलकुले-मीना के नग़मों से।
समा बँध जाता है जब बज़्ममें पैमाना आता है॥
'अख्तर' गयावी।

तेरी महफिलमें साक़ी कोई तरसे कतरये मय को।
किसीके सामने पैमाने पर पैमाना आता है॥
गजब है, मैं तो तरसूं तू लवे नाजुकका बोसा ले।
तेरी बख्ते रसा पर रश्क अय पैमाना आता है॥
'माहर' फरीदी।

बहकता अब्र जब कोई सरे मय खाना आता है।
छलकता रहमते गफ्फारका पैमाना आता है॥
इलाही कौन वासद लगज़िशे मस्ताना आता है।
सुराही झूमती है, बज़्ममें पैमाना आता है॥
'नक़ी' लखनवी।

पिला दो शरबते दीदार मुद्दतसे तमन्ना है।
कि प्यासा लेके अपनी आंखका पैमाना आता है॥

'सिकन्दर' खड़गपुर।

तेरी महफिलसे फिर कर जब कोई मस्ताना आता है।
किये लबरेज अपनी उम्रका पैमाना आता है॥
तेरी पलकें नहीं हैं—बहरे मयके दो किनारे हैं।
कि साक़ी दोनों हाथोंमें लिये पैमाना आता है॥
कफ़े अफ़सोस मलता हूं, कलेजा मुंहको आता है।
तेरे होठों तलक साक़ी अगर पैमाना आता है॥

'आजाद' कलकत्ता।

× × ×

वह बुत है मेहरबां सब अपना अपना हाल कहते हैं।
लबे ख़ामोश तुझको भी कोई अफ़साना आता है॥
उधर हैं हुस्नकी बातें इधर हैं इश्ककी बातें।
तुझे अफ़्सूं तो मुझको ऐ परी अफ़साना आता है॥

'अमीर' मीनाई

हमेशा फ़िक्रसे यां आशिक़ाना शेर ढलते हैं।
ज़बांको अपनी बस एक हुस्नका अफ़साना आता है॥

'आतिश' लखनवी

भला हो जोशे वहशतका कि पर्दा फ़ाश कर डाला।
हर एक ज़र्रेको सहराके मेरा अफ़साना आता है॥

'साक़िब' देहल

सुनाया हाले दिल रोकर तो हँस-हँसके वह यूं बोले।
तुम्हें ले-देके बस अपना ही एक अफ़साना आता है॥

'नकी' लखन

× × ×

तेरे कहनेसे काबेको चले चलते हैं अय वायज़।
मगर इसमें रहा पहले पहल बुतख़ाना आता है॥

'फर्द' लखन

अकड़ते तो चले हो "आर" तुम काबेको पर सम्भलो।
झुकाना सिर पड़ेगा राहमें बुतख़ाना आता है॥

'आर' बारकपु

नज़र दोनों घरोंमें जलवये जानाना आता है।
मेरी नज़रोंमें एकसां काबा ओ बुतख़ाना आता है॥

'सिकन्दर' खड़गपु

तसव्वरमें कभी अय अब्रूए जानाना आता है।
नज़र काबेके परदेमें मुझे बुतख़ाना आता है॥
चला तो हूं तेरे कहनेसे काबेको मगर वायज़!
बड़ी मुश्किल है पहले राहमें बुतख़ाना आता है॥

'आज़ाद' कलकत्त

ख़ुशीसे अपनी रुसवाई गवारा हो नहीं सकती।
गरेवां फाड़ता है तंग जब दीवाना आता है॥
'आतिश' लखनवी

मुझे जिस दम ख़याले नरगिसे मस्ताना आता है।
बड़ी मुश्किलसे क़ाबूमें दिले दीवाना आता है॥
'रिन्द' लखनवी

उधर ख़ंजर बकफ़ क़ातिल जो बेबाकाना आता है।
कफ़न बांधे हुए सरसे इधर दीवाना आता है॥
'शरफ' अजमेरी

सरे शोरीदा फोड़ेगा तड़पकर जान दे देगा।
गलीमें आपकी अब आपका दीवाना आता है॥
मैं सदके, ऐ जुनूं उनकी गली इस ढबसे पहुंचा दे।
कि वह ख़ुद कह उठें देखो मेरा दीवाना आता है॥
'माहर' फरीदी

मुझे बेख़ुद किया किसने मेरा दिल ले लिया किसने।
ये फिक़रा कह दिया-किसने मेरा दीवाना आता है॥
'कमाल'

किसीको होशमें पाऊं तो पूछूं क्या गुज़रती है।
गलीसे यारकी जो आता है दीवाना आता है॥
'रहबर' कलकत्ता

न छेड़ अय हमनशीं मचला तो पहरों रंग लायेगा।
बड़ी मुश्किलसे क़ाबूमें दिले दीवाना आता है।
'फ़र्द' लखनवी

मज़ा तो जब है ऐ जोशे जुनूं गर उनकी महफिलमें।
मैं जाऊं, बोल उठ्ठें वह मेरा दीवाना आता है॥
जो होना था हुआ जोशे मुहब्बतमें वही आखिर।
गरेबां फाड़ता सर फोड़ता दीवाना आता है॥
'आज़ाद' कलकत्ता

× × ×

तड़प जाता है दिल पहलूमें नजरें लोट जाती हैं।
ख़िरामे नाज़से जिस दम तेरा मस्ताना आता है॥
'नकी' लखनवी

मेरी जानिबसे तू जाना सबा कहना—वह दीवाना।
तेरा जिससे था याराना, वही मस्ताना आता है॥
'कमाल'

चला आता है कैसा अब्र काफ़िर उठके काबेसे।
कि जैसे मयकदेसे झूमता मस्ताना आता है॥
'आर' बारकपुरी

न जाने क्या तेरी आंखें पिला देती हैं रिन्दोंको।
तेरी महफिलसे जो आता है वह मस्ताना आता है॥
'आज़ाद' कलकत्ता

× × ×

सकूने दिल कभी बनना कभी बिजली गिरा देना।
निगाहे नाज़के सदके, उसे क्या क्या न आता है॥

'साकिब' देहलवी

बसा रक्खी है मेरे दिलमें हुस्नो इश्ककी दुनिया।
किसीको जलवा दिखलानेका ढब क्या क्या न आता है॥

'माहर' फरीदी

जलाना और तड़पाना ग़ज़ब करना, सितम ढाना।
तुझे ऐ गर्दिशे चर्ख़ कुहन क्या क्या न आता है॥

'आज़ाद' अमरोही



जो लहू आँखोंसे दामन पर गिरा दिल हो गया।



अय निगाहे यास यह क्या रंगे महफिल हो गया।
मैंने जिस दिलकी तरफ देखा मेरा दिल हो गया॥
मुझको वह लज़्ज़त मिली अहसास मुश्किल हो गया।
रहते रहते दिलमें तेरा दर्द भी दिल हो गया॥
लुत्फ़ एक रंगी मुहब्बतमें ये हासिल हो गया।
दर्द मेरा दिल बना मैं दर्दका दिल हो गया॥

'जिगर' मुरादाबादी।

करके दिलका ख़ून क्या बेताबियां कम हो गईं।
जो लहू आंखोंसे दामन पर गिरा, दिल हो गया॥

'फ़ानी' बदायूनी।

टूट जानेसे इस आईनेकी कीमत बढ़ गयी।
नामका दिल था मगर अब कामका दिल हो गया॥

'ज़हीर'।

मेरी बरबादीये दिलका उन पै क्या इलज़ाम है।
उनको चाहा खुद मैं अपना दुश्मने दिल हो गया॥

'अज़हर'।

क्या कहूं, पहलूमें रख लेनेके क़ाबिल हो गया।
अक्स लेकर तेरा आईना मेरा दिल हो गया॥
जानकी परवा न की क़ुरबान बिसमिल हो गया।
हाथ भरकी तेग़ थी दो हाथका दिल हो गया॥

'होशियार' मेरठी।

हुस्नके औ इश्कके टुकड़े बराबर बँट गये।
मेरा नाविक हो गया और आपका दिल हो गया॥

'नाज' देहलवी।

सच तो यह है जानेवाली चीज रुक सकती नहीं।
मेरे पहलूमें भी रह कर आपका दिल हो गया॥

'नसीम' मेरठी।

दर्द मन्दी आ गई—दर्द आशनाई आ गई।
दर्दे फुरक़त सहते सहते काम का दिल हो गया॥

'शरर' मेरठी।

अब न पैमाने वफ़ासे कोई दोनोंमें फिरे।
आप दिलके हो गये औ आपका दिल हो गया॥

'बर्क़' देहलवी

है यही एक यादगार उसकी खुदा रखे इसे।
दर्द ही पहलूमें हो रुखसत अगर दिल हो गया॥

'यास' टोंकी।

जब तलक दिल था हमारा सैकड़ों अरमान थे।
मिट गयीं सब हसरतें जब आपका दिल हो गया॥ ✓
पेंचमें गेसूके या मुट्ठीमें जूड़े के कहीं।
गुम इन्हीं दोनोंके फन्देमें मेरा दिल हो गया॥
बढ़ते बढ़ते इस कदर आजुर्दगी मेरी बढ़ी।
फूल जो फूला वह मुरझा कर मेरा दिल गया॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

× × ×

इब्तदा वह थी कि था जीना मुहब्बतमें मुहाल।
इन्तेहा यह है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया॥

'जिगर' मुरादाबादी।

मौत आने तक न आये, अब जो आये हो तो हाय!
जिन्दगी मुश्किल ही थी, मरना भी मुश्किल हो गया॥

'फ़ानी' बदायूनी।

आपको गुम करके अय 'मज़हर' उन्हें तो पा लिया।
खुदको पा लेना मगर अब सख्त मुश्किल हो गया॥

'मजहर'

मेरी मय्यतमें इलाही कौन शामिल हो गया।
अब लहदमें चैनसे सोना भी मुश्किल हो गया॥

'रजा' इटावी।

क्या बुरी सायत फंसे थे दामे उल्फ़तमें "सलीम"।
जिन्दगी तो जिन्दगी मरना भी मुश्किल हो गया॥

'सलीम' हापड़वी।

मुझको शौके दीद है और उनको परदेका खयाल।
अब तसव्वरमें भी आना उनका मुश्किल हो गया।
कुछ न पूछो हाल मेरा क्या शबे वादा रहा।
सख्त मुश्किल तो ये थी मरना भी मुश्किल हो गया॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

× × ×

ले चला था दिल मुझे कब बज़्मे जानांमें "अज़ीज"।
चलते चलते राहमें बेचारा गाफिल हो गया॥

'अज़ीज' लखनवी।

रंगे दुनिया देखकर "आजाद" ये जाहिर हुआ।
है वही हुशियार जो दुनियासे गाफिल हो गया॥
मस्त आंखोंने न जाने क्या पिलाया रात को।
कल तलक हुशियार जो था आज ग़ाफ़िल हो गया॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

है यही एक यादगार उसकी खुदा रखे इसे।
दर्द ही पहलूमें हो रुखसत अगर दिल हो गया॥

'यास' टोंकी।

जब तलक दिल था हमारा सैकड़ों अरमान थे।
मिट गयीं सब हसरतें जब आपका दिल हो गया॥ ✓
पेंचमें गेसूके या मुट्ठीमें जूड़े के कहीं।
गुम इन्हीं दोनोंके फन्देमें मेरा दिल हो गया॥
बढ़ते बढ़ते इस कदर आज़ुर्दगी मेरी बढ़ी।
फूल जो फूला वह मुरझा कर मेरा दिल गया॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

× × ×

इब्तदा वह थी कि था जीना मुहब्बतमें मुहाल।
इन्तेहा यह है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया॥

'जिगर' मुरादाबादी।

मौत आने तक न आये, अब जो आये हो तो हाय!
जिन्दगी मुश्किल ही थी, मरना भी मुश्किल हो गया॥

'फ़ानी' बदायूनी

आपको गुम करके अय 'मज़हर' उन्हें तो पा लिया।
खुदको पा लेना मगर अब सख्त मुश्किल हो गया॥

'मजहर'

मेरी मय्यतमें इलाही कौन शामिल हो गया।
अब लहदमें चैनसे सोना भी मुश्किल हो गया॥

'रज़ा' इटावी।

क्या बुरी सायत फंसे थे दामे उल्फतमें "सलीम"।
जिन्दगी तो जिन्दगी मरना भी मुश्किल हो गया॥

'सलीम' हापड़वा।

मुझको शौके दीद है और उनको परदेका खयाल।
अब तसव्वरमें भी आना उनका मुश्किल हो गया।
कुछ न पूछो हाल मेरा क्या शवे वादा रहा।
सख्त मुश्किल तो ये थी मरना भी मुश्किल हो गया॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

× × ×

ले चला था दिल मुझे कब बज़्मे जानांमें "अज़ीज"।
चलते चलते राहमें बेचारा गाफिल हो गया॥

'अज़ीज' लखनवी।

रंगे दुनिया देखकर "आजाद" ये जाहिर हुआ।
है वही हुशियार जो दुनियासे गाफिल हो गया॥
मस्त आंखोंने न जाने क्या पिलाया रात को।
कल तलक हुशियार जो था आज ग़ाफ़िल हो गया॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

सुनके तेरा नाम आंखें खोल देता था कोई।
आज तेरा नाम लेकर कोई गाफिल हो गया॥

'फानी' बदायूनी।

वह दमे आखिर यह कहकर मेरी बालींसे उठे।
हमसे आंखें फेर लीं हुशियार गाफिल हो गया॥

'होशियार' मेरठी।

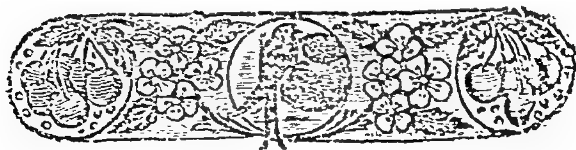
× × ×

शमूअ भी बुझनेको है, बीमार भी अब खत्म है।
जो शबे फुरकतका मतलब था वह हासिल हो गया॥

'अज़ीज' लखनवी।

उंगलियां उठने लगी हैं कूच ओ बाजार में।
तेरे दीवानेको यह रुतबा तो हासिल हो गया॥

'महमूद' देहलवी।





वहुत जो दर्द उठे दिल पै हाथ धर लेना।



दमे अख़ीर है लाज़िम नज़ारा कर लेना।
ख़ुदासे काम पड़ा है वुतो ख़वर लेना॥
चमकके अव्रसे आलम पै गिर पड़ी विजली।
ये किसने परदेसे झांका ज़रा ख़वर लेना॥
जिगरसे उठते हैं शोले कि दिलसे अय हमदम।
किधर ये आग लगी है ज़रा ख़वर लेना॥
वह मुस्कराके मेरे छेड़नेको कहते हैं।
कहां चमकके ये विजली गिरी ख़वर लेना॥
शहीदे नाज़का तावूत उठा तो फरमाया।
वरात जाती है किसकी ज़रा ख़वर लेना॥

—'अमीर' मीनाई

उधरकी सुध भी ज़रा अय पयामवर लेना।
ख़ुदाके वास्ते जल्दी मेरी ख़वर लेना॥

शिकार तीरे नज़र दिल हुआ जिगर न हुआ।
ये बच रहा है जरा इसकी भी ख़बर लेना॥

—'दाग़' देहलवी

उड़ा है पहले ही नाला मेरा ख़बर लेकर।
अबस है नामा ज़रा नामाबर ख़बर लेना॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

× × ×

ये तीरे ग़मज़ःसे कहती है तेग़े नाज़ उसकी।
जो दिल पै क़ब्ज़ा मेरा हो तो तू जिगर लेना॥

—'अमीर' लखनवी

क़नाअत आपको होती नहीं किसी शै पर।
ये क्या कि दिल कभी लेना कभी जिगर लेना॥

—'दाग़' देहलवी

अभीसे आपने नीची निगाहें क्यों कर लीं।
जो दिल लिया है तो क्या है अभी जिगर लेना॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

× × ×

पड़ी है देरसे मिट्टी ख़राब होती है।
लगा दो हाथ जनाज़ेको फिर संवर लेना॥

—'अमीर' लखनवी

मरीज़े ग़मका बुरा हाल है ख़बर लेना।
अभी तो उम्र पड़ी है, कभी संवर लेना॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

× × ×

ये मुझको देखके पलकोंको हुक्म अबरू है।
बचे जो तेग़से तुम बर्छियों पै धर लेना॥
तड़पके मुंहसे कलेजा निकल पड़े न "अमीर"
बहुत जो दर्द उठे दिल पै हाथ धर लेना॥

'अमीर' लखनवी।

हमें तो शौक है बेपर्दा तुमको देखेंगे।
तुम्हें है शर्म तो आंखों पै हाथ धर लेना॥ ✓

'दाग़' देहलवी।

किसीको और दबाना था बारे अहसां से।
किसीका प्यारसे मदफ़न पै हाथ धर लेना॥

'आज़ाद' कलकत्ता।

× × ×

लगाके हाथमें मेंहदी कहीं सरे महफ़िल।
किसीका खून न अय जान अपने सर लेना॥

'अहमद' कानपुरी।

वह क़त्ल करनेको आते हैं, शौक़से आयें।
गुनाह हमको है मंज़ूर अपने सर लेना॥

'आज़ाद' कलकत्ता।



कुछ न समझे खुदा करे कोई।



गर मरज़ १ हो दवा करे कोई।
मरनेवालेका क्या करे कोई।
तुम सरापा। हो सूरते तसवीर,
तुमसे फिर बात क्या करे कोई॥
जिसमें लाखों बरसकी हूरें हो,
ऐसे जन्नत को क्या करे कोई॥ ✓

—'दाग़' देहलवी

फांस हो तो निकाल दें अहबाव।
ख़लिशे दिलको क्या करे कोई॥

'अज़ीज़' लखनवी

आज मेरा है कल तुम्हारा है।
दिलसे उम्मीद क्या करे कोई॥

मरने वाला तो मर गया कहकर।
तुम न आओ तो क्या करे कोई॥
लाख आदाब हुस्न हो मंजूर।
दिल न माने तो क्या करे कोई॥
ग़मे दुनियासे कब मिली फुरसत।
फ़िक्र उक़्बा को क्या करे कोई॥
मरके निकले न हौसले दिलके।
ख़ाकमें मिलके क्या करे कोई॥
जाने वाला तो आ नहीं सकता।
उम्र भर रोके क्या करे कोई॥
क़ैदे हस्तो में ऐन राहत है।
होके 'आजाद' क्या करे कोई॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

बात पर ,वा ज़बान कटती है।
वह कहें और सुना करे कोई॥

—'ग़ालिब' देहलवी

आरजूये है हम बग़ल होकर।
मेरा क़िस्सा सुना करे कोई॥

'आज़ाद' कलकत्ता

बक रहा हूं जुनूं में क्या क्या कुछ।
कुछ न समझे खुदा करे कोई॥

—'ग़ालिब' देहलवी

फिर सुनाऊंगा मुद्दआ अपना।
सुन ले मेरी खुदा करे कोई॥

—'अज़ीज़' लखनवी

रोक लो गर ग़लत चले कोई।
बख्श दो गर खता करे कोई॥

—'ग़ालिब' देहलवी

कहते हैं हम नहीं खुदा है करीम।
क्यों हमारी ख़ता करे कोई॥

—'दाग़' देहलवी

मर गया कहके ये मरीज़े फ़िराक़।
अब न वादा वफ़ा करे कोई॥

—'अज़ीज़' लखनवी

जब्र सह लें और सब्र भी कर लें।
करके वादा वफ़ा करे कोई॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

जब तवक्का ही उठ गयी "ग़ालिब"।
क्यों किसीका गिला करे कोई॥

—'ग़ालिब' देहलवी

इस गिलेको गिला नहीं कहते।
गर मज़ेका गिला करे कोई॥

—'दाग़' देहलवी

मुह लगाते ही "दाग़" इतराना।
लुत्फ़ है फिर जफ़ा करे कोई॥

—'दाग़' देहलवी

मेरी सूरत जो देख ले आकर।
क्यों किसी पर जफ़ा करे कोई॥

—'आज़ाद' कलकत्ता

इब्न मरियम हुआ करे कोई।
मेरे दुखको दवा करे करे कोई॥
चाल जैसे कड़ी कमांका तीर।
दिलमें ऐसेके जा करे कोई॥
न सुनो गर बुरा कहे कोई।
न कहो गर बुरा करे कोई॥
कौन है जो नहीं है हाजतमन्द।
किस की हाजत रवा करे कोई॥

—'ग़ालिब' देहलवी

इस जफ़ापर तुम्हें तमन्ना है।
कि मेरी इल्तजा करे कोई॥

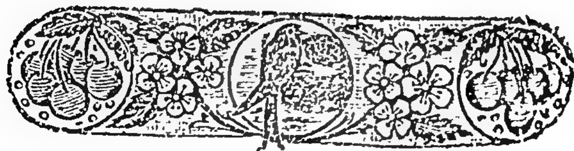
—'दाग़' देहलवी

अब न मेरी दवा करे कोई।
हो सके तो दुआ करे कोई॥

—'अज़ीज़' लखनवी

दर्दकी क्या दवा करे कोई।
दिलको क्यों बेमज़ा करे कोई॥
राहे उल्फ़त कभी न तय होगी।
ज़िन्दगी भर चला करे कोई॥
आप तो हाथमें मलें मेंहदी।
दस्ते हसरत मला करे कोई॥
बुझ गयी शम्अ सुबह यह कहकर।
यों ही कब तक जला करे कोई।

—'आज़ाद' कलकत्ता





हमारे लब पै क्यों हरदम तुम्हारा नाम आता है



मिला रखना भी क़ासिदको बहुत कुछ काम आता है।
किसीके नामका ख़त हो, किसीके नाम आता है॥
ख़ुदा पर ध्यान रख इश्क़े बुतांमें अय दिले मुज़तर।
मुसीबतमें वही काम आने वाला काम आता है॥
ये कसरत बादाख़्वारोंकी है अब साक़ीकी महफ़िलमें।
जो आता है तो ख़ाली होके मुंह तक जाम आता है॥
हमारा दिल है लेकिन वास्ता रखता नहीं हमसे।
तुम्हारे कामका ये है तुम्हारे काम आता है॥
इसे भी रोक रक्खो तुम अगर मिलनेसे रुकते हो।
हमारे लब पै क्यों हरदम तुम्हारा नाम आता है॥
ठहरते हैं हमीं क्या सख़्त जां बिसमिल न होने से।
तेरे ख़ञ्जर पै भी थोड़ा बहुत इलज़ाम आता है॥

सितम करना जफ़ा करनी सितम सहना जफ़ा सहनी।
तुम्हें हर बात आती है मुझे हर काम आता है॥
कहूं क्या हाले दिल कहनेका मौक़ा ही नहीं मिलता।
वहींसे वह मुझे देता हुआ दुश्नाम आता है॥
असीरीमें ग़नीमत है मेरे सय्याद का दम भी।
यही तो बस खबर लेने को सुबहो शाम आता है॥
वह क्योंकर शाद हो दुनिया में क्या खुश हो जमाने में।
कि नाकामीको लेकर आशिके नाकाम आता है॥
जो आग़ोशे तमन्ना में कभी दिन रात रहता था।
न अब वह सुवह आता है न अब वह शाम आता है॥
वही नाला वही शेवन वही आहें वही ज़ारी।
दिले नाकाम तुझको और कोई काम आता है॥
शबे ग़म कोई नाला भी निकलता है अगर दिलसे।
हमारे लबपै वह बन कर तुम्हारा नाम आता है॥
जो मैं तूफ़ान उठाता हूं तो वह अय 'नूह' कहते हैं।
तुम्हें इसके सिवा भी और कोई काम आता है॥

—"नूह" नारवी

हमें तो अव किसी पहलू नहीं आराम आता है।
तुम्हीं इस दिलको ले लो ये तुम्हारे काम आता है॥

दमे आखिर लिखे थे जिसमें अपने तजरुवे तुमको।
वह खत्ते शौक देखूं किसके-किसके काम आता है॥
न समझो वेहकीकत इस कदर तुम जिन्दगी दिलकी।
लहूका एक कतरा भी वहुत कुछ काम आता है॥
कहूं मक़तल में किससे मैं भी मुश्ताके शहादत हूं।
यहां सब खुद ग़रज़ हैं कौन किसके काम आता है॥
किसी महफिलमें अब जानेके क़ाबिल हो नहीं अय दिल,
वह आलम है ज़वां पर अक्सर उनका नाम आता है॥
मेरे चेहरेको अय चादर हटा कर देखने वाले।
मरीजे हिज्र को देख इस तरह आराम आता है॥

—"अज़ीज" लखनवी

फलक पर रंग खूनी यह न सुवहो शाम आता है।
जहांके सामने वस इश्कका अञ्जाम आता है॥
निगाहोंने उसे देखा लुटा पर कारवां अपना।
गुनह करता है कौन और किसके सर इल्ज़ाम आता है॥
इधर दिल आप ही फंस जानेको आगे उछलता है।
उधरसे क्यों उड़ा वह गेसुओंका दाम आता है॥
सुवह वेदार होकर सुननेको तैयार हैं गुञ्चे।
नसीमे सुवहके हाथों कोई पैगाम आता है॥

नहीं है चैन मुतलक बेक़राराने मुहब्बत को।
नहीं क़िस्मत तो बदबख़्तोंको आराम आता है॥
कभी रुख़सार पर शैदा कभी जुल्फों का है सौदा।
ख़याल इतना दिले शैदा को सुबहो शाम आता है॥
बना है आपसे नादान दाना हांके वह ज़ालिम।
वह मुंहको फेर लेता है मेरा जब नाम आता है॥
अभी तो इब्तिदाये इश्क़ है अय हज़रते 'फ़रहत'।
तुम्हारे सामने क्या देखना अञ्जाम आता है॥

— "फ़रहत" रायगढ़

इसे पहलूमें रखकर कब हमें आराम आता है।
तुम्हीं रख लो मेरे दिलको तुम्हारे काम आता है॥
अंधेरा और सन्नाटा ये ख़ामोशी ये वीरानी।
लहदमें सोने वालो क्या तुम्हें आराम आता है॥
तसल्लीके लिये इतना ही बस काफ़ी है दिल दे कर।
मेरा नाकाम दिल भी अब किसी के काम आता है॥
हक़ीकत कुछ नहीं है फिर भी सब कुछ है मेरे दिलकी।
ये वह कतरा लहूका है जो सब के काम आता है॥
निज़अमें ले लिये बोसे जवांने लबके ये कहकर।
बलाएं ले लूं तेरी तुझ पै उसका नाम आता है॥

'आज़ाद' कलकत्ता।



दिलपर किसीके चोट पड़ी हमने आह की ।



आंख उस परीसे मिलते ही यां काम हो गया ।
फुरसत मिली न हाय दोबारा निगाह की ॥
बिसमिल तेरा बचेगा न अय तुर्क देख तो ।
बरछी उतर गयी है जिगरतक निगाहकी ॥

"अमीर" मीनाई ।

किस किसका आज देखिये खाना खराब हो ।
बेतरह, कुछ तरह है अय उसके निगाहकी ॥

मीर 'असर' ।

मिलते ही उससे आंख जो हमने एक आह की ।
घबराके उसने शर्मसे नीची निगाह की ॥
ये क्या हुआ कि खाकमें मैं खुद ही मिल गया ।
उसने जो मुझको देखके नीची निगाह की ॥

'आज़ाद' कलकत्ता

× × ×

शिरकत न की मलाल में किस दादख्वाह की।
दिलपर किसीके चोट पड़ी हमने आहकी॥
ये मेरे दिलको पासे नजाकत था यारका।
तड़पा ठहर ठहरके तो थम थमके आह की॥
किस्मत ओ ले चली मुझे कूचेसे यारके।
हसरतसे देखकर सूय गरदूं एक आह की॥
ऐसा किया है दश्त नवर्दोने नातवां।
मैं पिस गया जो उड़के परी गर्द आह की॥

'अमीर' मीनाई

घबराके सबने उनको तरफ एक निगाह की।
किस दिलशिकस्तःने दमे आखिर यह आह की॥

—'अजीज' लखनवी

आप ही न जल बुझे न कुछ उस दिलमें राहकी।
इसपर कहेंगे आह कि हमने भी आह की॥

'मीर' असर

तसवीर हमने खींची जो हाले तबाह की।
चारों तरफसे आयी सदा आह आह की॥
जाहिर न सोज़े इश्क हो, बदनाम हो न तू।
मरनेको मर गये मगर हमने न आह की॥

'आजाद' कलकत्ता।

महशरमें उनको देखके अल्लाह रे खुशी।
तरदीद कर रहा हूं खुद अपने गवाहकी॥
'आतिश' लखनवी।

महशरमें देखता हूं खुदा उनके साथ है।
बेकार हो न जाय गवाही गवाह की॥
आंखें बता रही हैं कि जागे हो रातको।
अन्दाज कहते हैं नहीं हाजत गवाह की॥ ✓
'आज़ाद' कलकत्ता।

× × ×

आंधी जो रोजे हश्र हुवा हमने आह की।
उड़ती फिरेगी फर्द हमारे गुनाह की॥
क्या क्या शबे विसालमें गुस्ताखियां हुईं।
तकरीर मुझको देंगे वह किस किस गुनाहकी॥
सुरमा तलब हुआ है खुदा खैर ही करे।
आयेगी शामत आज किसी बेगुनाह की॥
हम दिल जले गये तो जहन्नुम पुकार उठा।
यारब सजा मिली है मुझे किस गुनाह की॥
सर कत्लगहमें दे के अदमको गया 'अमीर'।
ली घरकी राह फेंकके गठरी गुनाह की॥
'अमीर' मीनाई।

आज़ाद गाने इश्ककी गुस्ताखियां तो देख।
खुद दाद मांगते हैं तुझीसे गुनाह की॥

'अज़ीज़' लखनवी।

निकले हैं बन संवरके खुदा खैर ही करे।
क्या जाने जान जायगी किस बेगुनाह की॥
भारी था बोझ जिस्मका और दूर था अदम।
हम रख चले यहीं पै हैं गठरी गुनाह की॥

'आज़ाद' कलकत्ता

उड़ती हुई ये खाक परीशान, ये हवा।
तशरीह है 'अज़ीज़' के हाले तबाह की॥

'अजीज' लखनवी।

जिसने किया तबाह उसीको खबर नहीं।
दुनियाको है खबर मेरे हाले तबाहकी॥
कुछ तो बताओ, चेहरेका क्यों रंग उड़ गया।
क्यों आज किस ग़रीबकी मिट्टी तबाह की॥

'आजाद' कलकत्ता।

\+ \+ \+

अहले-अदमसे क्यों न हो मंज़िल पै मेल जोल।
है इन मुसाफिरोंमें मुलाक़ात राह की॥

जाहिद बड़े सवाबसे महरूम रह गया।
काबे गया मगर न किसी दिलमें राहकी ॥
किसको सवारी आयी है सहरामें अय जुनूं ।
उठ उठके रक्स करती है क्यों गर्द राहकी ॥

'अमीर' मीनाई

कहती है रूह आयी है जितनी कि हिचकियां।
उतनी ही मैंने ठोकरें खायी हैं राहकी ॥

'अज़ीज़' लखनवी।

शोखी किसीके दिलसे मेरे दिलमें आ गयी।
दिलने किसीके दिलसे अगर रस्मो राह की ॥
नाला मेरा हरएकके दिलमें समा गया।
एक तेरे संगदिलमें नहीं इसने राह की ॥

'आजाद' कलकत्ता।



जिन्दगी राहपर नहीं आती ।



कोई उम्मीद बर नहीं आती ।
कोई सूरत नज़र नहीं आती ॥

'ग़ालिब' देहलवी

फिर गयी आपकी निगाहे करम ।
वह नज़र अब नज़र नहीं आती ॥
तुझमें अय 'नूह' शायरीके सिवा ।
कोई ख़ूबी नज़र नहीं आती ॥

'नूह' नारवी

जिसने तेरी नज़रको देख दिया ।
उसको दुनिया नज़र नहीं आती ॥

'जिगर' बरेलवी

तू मेरी जान गर नहीं आती।
ज़ीस्त होती नज़र नहीं आती॥
दिन कटा जिस तरह कटा लेकिन।
रात कटती नजर नहीं आती॥

'असर'

उनकी नजरोंमें एक दुनिया है।
हमको दुनिया नजर नहीं आती॥
कैसे काटूं मैं हिज्रकी घड़ियां।
शब गुजरती नजर नहीं आती॥

'आजाद' कलकत्ता

* * * * *

हम वहां हैं जहांसे हमको भी।
कुछ हमारी खबर नहीं आती॥

'गालिब'

मरनेवाला तेरा वहां पहुंचा।
जिस जगहसे खबर नहीं आती॥

'नूह'

नहीं मालूम दिल पे क्या गुजरी।
इन दिनों कुछ खबर नहीं आती॥

'असर'

पूछता हूं मैं बेखबर होकर।
जब किसीकी खबर नहीं आती॥

'आजाद'

क्यों न चीखूं कि याद करते हैं।
मेरी आवाज़ गर नहीं आती॥
काबा किस मुंहसे जाओगे'ग़ालिब'।
शर्म तुमको मगर नहीं आती॥

'ग़ालिब'

हो गया खुश्क चो भी क्या शवे ग़म।
बूए खूने जिगर नहीं आती॥
बढ़ गया दर्द और दरमां से।
शर्म अय चारागर नहीं आती।

'नूह'

दिलको लज्जत-शनासे गम कर लें।
मौत हमको अगर नहीं आती॥
तक तदबीर भी नहीं आसां।
रास तदबीर अगर नहीं आती॥

'जिगर'

कीजिये नामेहरबानी ही आकर।
मेहरबानी अगर नहीं आती॥

हरदम आती है गरचे आह पर आह।
पर कोई कारगर नहीं आती॥
आगे आती थी हाले दिल पै हँसी।
अब किसी बात पर नहीं आती॥
मरते हैं आरज़ू में मरने की।
मौत आती है पर नहीं आती॥

'ग़ालिब'

मौत जब तक नज़र नहीं आती।
ज़िन्दगी राह पर नहीं आती॥

'जिगर'

दिल-रुबाई औ दिलबरी तुझ को।
गोकि आती है पर नहीं आती॥
क्या कहूं आह! मैं किसी के हुज़ूर।
नींद किस बात पर नहीं आती॥

'असर'

मौतका एक दिन मुकर्रर है।
नींद क्यों रात भर नहीं आती॥
है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूं।
वरना क्या बात कर नहीं आती॥

'ग़ालिब'

वक्तसे पेश्तर नहीं आती।
मौत भी उम्र भर नहीं आती॥
रूह भी सख़्त बेमुरव्वत है।
ये जो निकली तो घर नहीं आती॥
किससे पूछूं चमनमें हाले चमन।
अब हवा भी इधर नहीं आती॥
हाथ आना तो सख़्त मुश्किल है।
ज़ेहन में वह कमर नहीं आती॥

'नूह'

अश्क पै हम 'जिगर' नहीं थमते।
राह पर चश्मतर नहीं आती॥

'जिगर'

हाले दिल मिस्ले शमअ् रौशन है।
गो मुझे बात कर नहीं आती॥

'असर'

बूए गुल की तरह बशर की जां।
घरसे निकली तो घर नहीं आती॥
लज़्ज़ते वस्ल क्या मुयस्सर हो।
हाथ उनकी कमर नहीं आती॥

'आज़ाद'

आग पानीमें लगी ऐसी कि दरिया जल गया।

दिल मेरा सोजे निहांसे बेमुहाबा जल गया।
आतिशे खामोशकी मानिन्द गोया जल गया॥
दिलमें ज़ौके वस्ल यादे यार तक बाकी नहीं।
आग इस घरमें लगी ऐसी कि जो था जल गया॥
दिल नहीं तुझको दिखाता वरना दागोंकी बहार।
इस चिरागां का करूं क्या कारफरमा जल गया॥

'गालिब'

पास रुसवाई कहांतक, दिल जब अपना जल गया।
राज़ ग़म जिसमें छिपाते थे वह परदा जल गया॥
क़तरा एक एक अश्के ग़मका आतिशे सय्याल था।
बहके जितनी दूर आया उतना चेहरा जल गया॥
बर्कने की हर तरफ़ मेरे नशेमन की तलाश।
चार तिनकों की बिना पर बाग़ सारा जल गया॥

जान डालेगे न परवाने में आंसू शम्अ के।
होगा इन छींटोंसे अब क्या जलनेवाला जल गया ॥
पहले थी फ़िक्र आग हसरत ख़ानये दिलकी बुझे।
अब है इसकी जुस्तजू क्या रह गया क्या जल गया।

'आरज़ू' लखनवी

सोज़े ग़मसे अश्कका एक-एक क़तरा जल गया।
आग पानीमें लगी ऐसी कि दरिया जल गया ॥
वक़्ते दीदार आंखका हरएक परदा जल गया।
देखिये सब साजो सामाने तमाशा जल गया ॥
किस क़दर अब दूर मुझसे बैठता है चारागर।
जख़्मपर रखने न पाया था कि फाहा जल गया ॥
देखकर बर्के तजल्ली उड़ गये मूसाके होश।
जलवागाहे नाजका जिस वक्त परदा जल गया ॥
दिल भी था और दिलमें दुनियाभरके सामाने निशात्।
तुम समझते थे मैं सोजे गमसे तनहा जल गया ॥
जब कोई क़तरा गुदाज़े दिलका आये आंख तक।
रोनेवाले बस समझ लेना ये छाला जल गया ॥
आबला पहले पड़ा फिर जख़्म उसके बाद दाग़।
मुख़्तसर ये है यूंही सब दिल हमारा जल गया ॥

आग तो दिलकी बुझा लेने दो फिर कुछ पूंछना।
होश किसको जो बताये क्या रहा क्या जल गया॥
दाग़ उल्फ़तने लगा दी आग सब दिलमें 'अज़ीज़'।
एक चिनगारीसे सारा घर हमारा जल गया॥

'अजीज' लखनवी

एक निगहमें आंखका हर एक परदा जल गया।
बाद उसके दिल जला, फिर जिस्म सारा जल गया॥
उफ़री शिद्दत सोजिशे ग़मकी कि दिलके जख्मपर।
चारागर रखने न पाया था कि फाहा जल गया॥
जल रहे हैं दाग दिलके और सामाने निशात।
आग बुझ जाये तो देखें क्या रहा क्या जल गया॥
सोजे पिनहांने दबाई थी ये कैसी दिलमें आग।
जिससे रफता-रफता मेरा जिस्म सारा जल गया॥
तावे नज़ारा कहां थी मेरी चश्मे जार में।
एक ही जलवेमें सब आंखोंका परदा जल गया॥
शुक्र है इतना तो मेरी आहे सोजांने किया।
दिलके ऊपर जो पड़ा था ग़मका छाला जल गया॥
उनकी सूरत देखकर "महमूद" क्यों शशदर हुए।
क्या तुम्हारे होशका हर एक परदा जल गया॥

आगा अली 'महमूद'

ख़ूने दिलका आहसे हर एक क़तरा जल गया।
आग पानीमें लगी ऐसी कि दरिया जल गया॥
दाग़ दिलने क्या लगा दी आग सारे जिस्ममें।
एक चिनगारीसे सारा घर हमारा जल गया॥
ख़्वाबमें कल रातको आया नजर वह शोलारू।
शर्मका आंखों पै जो परदा पड़ा था जल गया॥
ज़ब्तिये ग़मपर भी तुरबत से निकलता है धुंआं।
सोज़ पिनहां करके मरनेपर सरापा जल गया॥
या इलाही क्या कहर बर्के निहगने ढा दिया।
इक-ब-इक जिसपर नज़र डाली बेचारा जल गया॥
सोज़िशे उल्फतसे सारी आरज़ूयें जल गईं।
दिल जलेकी आहसे दिलका सहारा जल गया॥
दागे दिलपर रौग़ने आंसू गिरे—ऐसे गिरे।
दिल तो पहले जल चुका था अब कलेजा जल गया॥
चीख उठी बुलबुल गिरी जब आशियांपर बिजलियां।
हाय! तिनकेका सहारा भी हमारा जल गया॥
ताबिशे रुख़से निगाहें क्यों न जल जायें मेरी।
जल उठी शमूआ तो परवाना बेचारा जल गया॥
था बयाने सोजे दिल उसपर पड़ी बर्क़ नज़र।
पड़ते ही उनकी निगह नामा हमारा जल गया॥

क्या ज़रूरत है चिताकी, आगकी, ईंधनकी अब।
मैं तो अपनी आहे सोज़ांसे सरापा जल गया॥
आतिशे फुरकतमें जलता हूं मैं-मेरा क्या इलाज?
हाथ रक्खा नब्ज़पर दस्ते मसीहा जल गया॥
सोज़े दिलसे बुलबुलोंने आह की कुछ इस कदर।
पहले तो गुलशन जला फिर आशियाना जल गया॥
हज़रते 'आज़ाद' लिक्खी है ग़ज़ल क्या शोला बार।
आग मतलेमें लगी ऐसी कि मक़ता जल गया॥

'आज़ाद' कलकत्ता